अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना

अनुग्रह के सुसमाचार में
नये शिष्यों और वृद्धिगत विश्वासियों को
स्थापित करने के लिए एक नियमावली

उन बाइबल सिद्धान्तों का उपयोग करते हुए जो संस्कृतियों और समय से परे के हैं

टिम डब्ल्यू. बन

तीसरा संस्करण

कॉपीराईट © 2020 न्यू फॉऊंडेशन इंटरनेशनल द्वारा

Apne Shiyom Ke Leye Parmeshwar Ke Yojana

God's Plan for His Disciples (Hindi)

Scripture quotations indicated by ESV are taken from the English Standard Version.
Copyright © 2001 by Crossway, a publishing ministry of Good News Publishers.
All rights reserved.

New Foundations International
http://www.newfoundationsinternational.org
Please contact us or send a request for information at:
newfoundationsinternational@gmail.com

प्रस्तावना

सेवकाई में मेरे भाई और सहभागी, शरमैन ड्राईवर, का मैं धन्यवाद करना चाहूँगा, *अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना* में उनके कठोर संपादन कार्य और इसके कई संस्करणों की रूपरेखा तैयार करने के लिए, जबकि विदेशी स्थानों में अत्यंत पीड़ा और दु:ख के साथ काम करना आसान नहीं होता। मैं शरमैन, रेंडी मैथ्यूस, टेरी मनाहन और जौनाथन कुक का विश्व भर में परमेश्वर की कलीसिया के लिए इस उपकरण को उपलब्ध कराने में उनकी अनुग्रहकारी समझ और बाइबल संबंधित अन्तर्दृष्टि के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा। मैं यह मानता हूँ कि उनके द्वारा दी जाने वाली सुधार की सलाह न केवल इसे शिष्यता की ''बाइबल प्रक्रिया'' बनाती है, परन्तु एक ''प्रभावशाली उपकरण'' भी, कि शिष्यों की सहायता करे *''विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो, जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया, और जिसका मैं, पौलुस (शरमैन, रेंडी, टेरी, जोनाथन और टिम) सेवक बना''* (कुलुस्सियों 1:23)। अंत में परन्तु किसी भी तरह से कम नहीं, मैं हमारी पत्नियों का उनके बलिदान के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने हमें महान आज्ञा को आगे पहुंचाने के लिए अधिक समय तक समर्पित रहने और शक्ति लगाने का समय दिया (मत्ती 28:18-20)।

परिचय

यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और मृतकों में से जी उठने के पश्चात्, उसने अपने अनुयायियों, या शिष्यों, को एक स्पष्ट आज्ञा दी, जिसे **महान आज्ञा** के नाम से जाना जाता है। *''इसलिये तुम **जाओ,** सब जातियों के लोगों को चेला **बनाओ;** और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से **बपतिस्मा दो** और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना **सिखाओ** और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ''* (मत्ती 28:19-20)। यीशु के संदेश और मिशन का मूल केन्द्र शिष्य बनाना है। प्रेरित पौलुस ने इस आज्ञा का पालन किया और उसे अन्यजाति संसार में जाकर शिष्य बनाने को कहा गया। आओ देखें कि उसने कैसे इस महान आज्ञा पर काम किया। पौलुस, पवित्र आत्मा और अन्ताकिया की कलीसिया के भेजे जाने से **गया**। (प्रेरितों के काम 13:1-3)। पौलुस ने सुसमाचार का प्रचार कर शिष्य **बनाए** (प्रेरित. 14:6-7) और शिष्यों को **बपतिस्मा दिया** (प्रेरित. 16:31-34)। पौलुस उन कलीसियाओं में लौटकर आने पर विश्वासियों को सिखा व स्थापित कर रहा था जहाँ उसने पहले सुसमाचार का प्रचार किया था ताकि वहाँ के शिष्यों की आत्माओं को दृढ़ करे (प्रेरित. 14:21-22), जिन्होंने मसीह का अनुसरण करते हुए सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया दी थी।

अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना में, हमने बाइबल के आदर्श और आरम्भिक कलीसिया में पाए जाने वाले नमूने का अनुसरण करने का प्रयास किया है जिसका विवरण प्रेरितों के काम पुस्तक में मिलता है जिसके परिणामस्वरूप कलीसिया का अब तक का सबसे बड़ा विस्तार व वृद्धि हुई। यह विस्तार केवल 25 वर्षों में ही यरुशलेम से रोम तक होने पाया, जिसके कारण प्रेरित पौलुस दस वर्षों में ही अपनी तीन मिशनरी यात्राओं को पूरा कर पाया। हमें इस पर भी ध्यान देना चाहिए कि इन आरम्भिक शिष्यों ने अपने समय के संसार को पलट कर रख दिया था (प्रेरित. 17:6) और उनमें से बहुतों ने सुसमाचार के लिए अपने जीवन तक दे दिये थे।

यह प्रशिक्षण पाठयक्रम, अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना, आपके लिए इस तरह से तैयार किया गया है कि आप स्वयं अपने लिए शास्त्र वचनों की खोज कर सके और यह जान सकें कि यीशु मसीह के सच्चे शिष्य होने का अर्थ क्या है। मसीह के परिपक्व अनुयायी बनने के बाद, आप में से कुछ अगुवाई में रहकर मसीह के पीछे चलना चाहेंगे। यदि आपका मन और इच्छा यही है, तो अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना पुस्तक को भी पढ़ें **www.newfoundationsinternational.org/training-resources** से नि:शुल्क डाऊनलौड करें) या पुस्तक पाने के लिए newfoundationsinternational@gmail.com पर ई-मेल करें। आओ अब मसीह के एक स्थापित और परिपक्व शिष्य या अनुयायी बनने की प्रक्रिया का आरंभ करें।

कार्य-पूर्व निर्देश

हम इस बात के लिए बहुत धन्यवादी हैं कि परमेश्वर अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना के माध्यम से आपको काम में आगे बढ़ा रहा है। नीचे कुछ निर्देश दिये गए हैं जिनके लिए हम आपसे यही कहेंगे कि इस सामग्री से कार्य करते हुए, चाहे व्यक्तिगत रूप से या शिक्षक के साथ, आप इनका जितना अधिक संभव हो पालन करें। इस नियमावली को पूरा करने के बाद, हम आपको यह सलाह भी देंगे कि उस व्यक्ति से आमने-सामने मिलें जिसने गहरी व्यक्तिगत कार्यवाही के लिए आपको *अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना* से परिचत कराया था। यदि ऐसा कोई व्यक्ति न हो, तो अपने प्रश्नों के उत्तर या आगे की

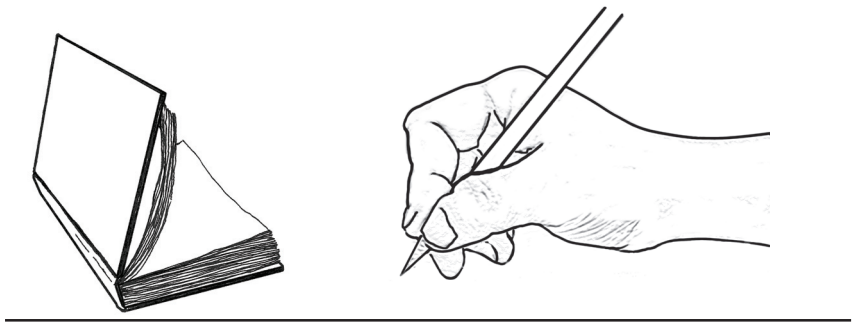

पढ़ना **लिखना**

जानकारी पाने के लिए हमसे **newfoundation sinternational@gmail.com** पर संपर्क करें।

शास्त्रवचनों को पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर देने को पूरा कर लेने के बाद, पृष्ठ 6 पर पाठ के साथ दिये खाली स्थान में पूरा करने की तिथि को लिखें। **(नोट :** पृष्ठ 20-22 पर, पाठ 6-7 **बाइबल का अध्ययन कैसे करें,** को देखें **)** यदि आपके साथ काम करने को कोई नहीं है या कोई छोटा समूह नहीं है तो **विचार-विमर्श** रिक्त स्थानों को बाद में भरा जा सकता है।

मौखिक और दृश्य शिक्षार्थियों के लिए प्रशिक्षण सहायता

विश्व में अनुमानित 5-7 अरब के लगभग लोग मौखिक और दृश्य शिक्षार्थी हैं या साक्षरता की सामान्य दर से नीचे के हैं। बहुत से मौखिक और दृश्य शिक्षार्थी ऐसी संस्कृतियों से हैं जो पुस्तकों से नहीं बल्कि बातचीत, कथानक, संगीत और दृश्य कला से सिखाती हैं। इस कारण, मौखिक शिक्षार्थियों को लिखित शब्दों को समझने में परेशानी हो सकती हैं और अधिकांश सुनकर या देखकर सीखना पसंद करते हैं। सकारात्मक ध्यान देने योग्य बात यह है कि, अधिकांश मौखिक और दृश्य शिक्षार्थी जो सुनते हैं, कहते हैं और देखते हैं उसका 75 प्रतिशत तक याद रख पाते हैं। आज विश्व में अधिकांश जिन समूहों तक नहीं पहुँचा गया है वे मौखिक और दृश्य शिक्षार्थी हैं।

अत: विचार-विमर्श प्रश्नों और दृश्यों को शामिल किए बिना जानकारी पाने को केवल पढ़ने पर ही निर्भर न रहें। एक दूसरे के साथ और समूहों में विचार-विमर्श के लिए अधिक समय निकालें। मौखिक शिक्षार्थी विषयों पर दूसरों से बात करने के द्वारा संबन्ध या संपर्क बना सकते हैं। किसी अवधारणा को समझाने के लिए पूरी तरह से दृश्यों पर निर्भर न रहें या यह कल्पना न करें कि उनके लिए दृश्य ही सहायक होंगे। सबसे अधिक संभावना यह है कि उन्हें दृश्यों को समझने में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होगी। यहाँ एक बुनियादी प्रारूप है जिसका उपयोग आप मौखिक शिक्षार्थियों की शास्त्रवचनों को समझने में सहायता करने के लिए कर सकते हैं। यह रुपरेखा प्रेरितों के काम 8:26-38 में फिलिप्पुस और कूश के खोजे की कहानी से है। प्रार्थना करने और पवित्र आत्मा से आपको सिखाने के लिए कहने के बाद आप मौखिक शिक्षार्थियों को यह कहानी सुना सकते हैं। इसके

बाद अगले पृष्ठ 5 पर दिये चरणों का पालन करें। **(नोटः मौखिक और दृश्य शिक्षार्थियों की सहायता के लिए पृष्ठ और आवरण पृष्ठ 4 के भीतर दिये चित्रों को देखें)।**

1. एक साथ मिलकर परमेश्वर के वचन को पढ़ें और जिसका उन्होंने **अवलोकन** किया है उसे उन्हें दोहराने या ऊँची आवाज़ में बोलने दें। जो आपने पढ़ा है और जिसका अवलोकन किया है उसके समर्थन में दृश्यों का उपयोग करें। (प्रेरितों के काम 8:28 देखें)।
2. मौखिक शिक्षार्थियों से उस पर **ध्यान** करने या **विचार** करने और उसे स्पष्ट करने को कहें जो उन्होंने परमेश्वर के वचन और दृश्यों से जाना या देखा है। (प्रेरितों के काम 8:30 देखें)।
3. परमेश्वर जो कह रहा है और दृश्यों का क्या अर्थ है, उस बारे में प्रश्न करते और उत्तर देते हुए **विचार-विमर्श** करें। मुख्य सिद्धांत क्या हैं और वे आपके साथ कैसे मेल खाते हैं? (प्रेरितों के काम 8:31-35 देखें)।
4. अब क्या? आप अपने जीवन के लिए कैसे और कब **व्यावहारिकता** बनाएंगे? (प्रेरितों के काम 8:36-38 देखें)।

अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना

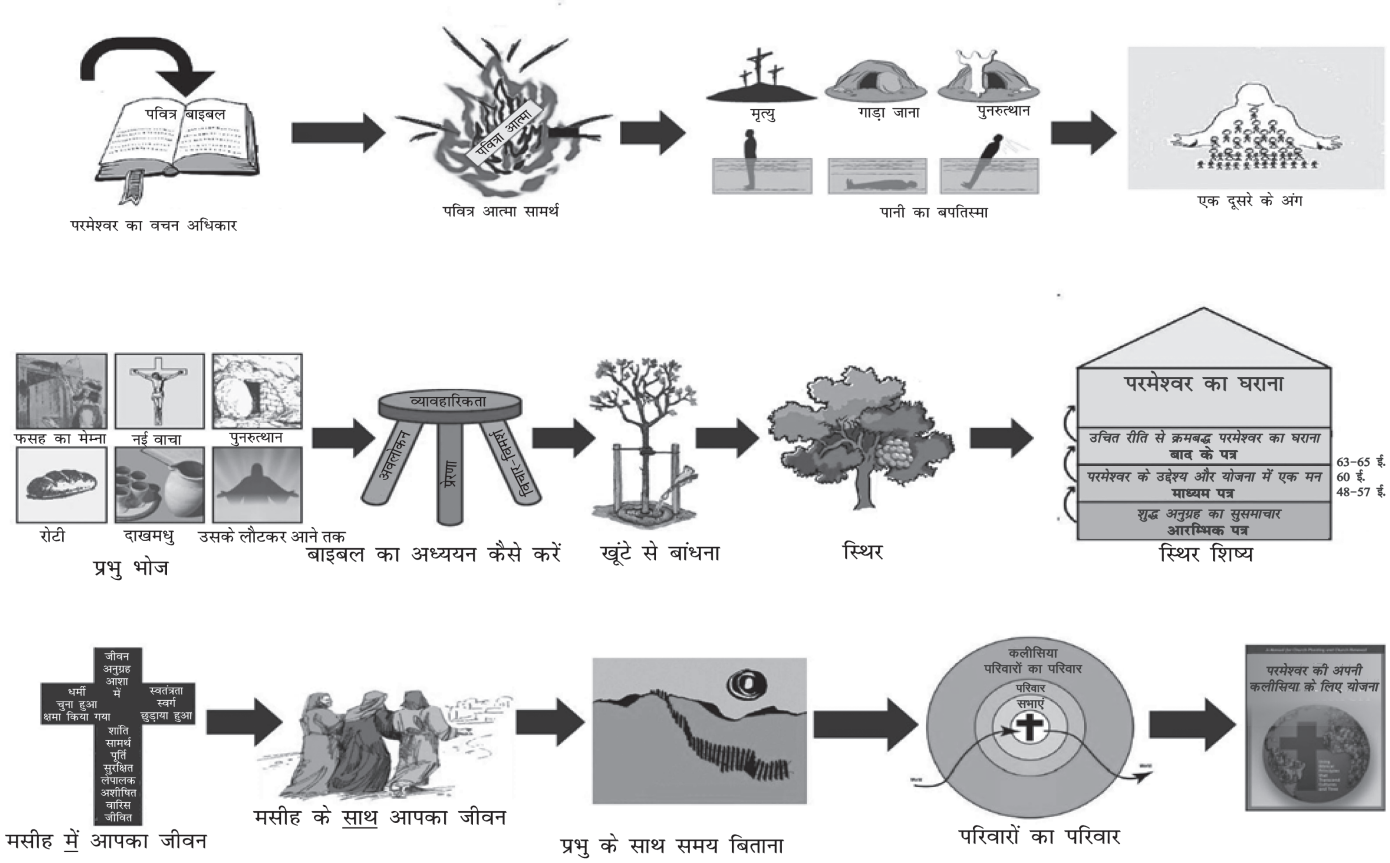

(इस चार्ट के रंगीन संस्करण के लिए भीतरी आवरण पृष्ठ को देखें)।

जब आप प्रभु यीशु में अपने विश्वास को दृढ़ और स्थिर करने के लिए इस समयोचित सुअवसर का आरंभ करते और हमारे उद्धारकर्ता के शिष्य के रूप में प्रगति के पथ पर बढ़ने का आरंभ करते हैं, हम आपके लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

विषय-सूची

अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना - भाग एक

I. शिष्यों का अधिकार और भरपूरी 8

पाठ 1 वचन का अधिकार और भरपूरी 8

पाठ 2 आत्मा का अधिकार और भरपूरी 11

II. शिष्यों की आज्ञाकारिता, सदस्यता और यादगारी 14

पाठ 3 जल का बपतिस्मा (प्रेरितों के काम 2:41 और 10:43-48) 14

पाठ 4 एक दूसरे के अंग (1 कुरिन्थियों 12:13) 16

पाठ 5 प्रभु भोज (प्रेरितों के काम 2:42) 18

पाठ 5 क प्रार्थना (प्रेरितों के काम 2:42) 20

III. बाइबल अध्ययन में स्थापित चेले 23

पाठ 6 बाइबल का अध्ययन कैसे करें पर निर्देश (प्रेरितों के काम 8:26-38) 23

पाठ 7 इस पर अभ्यास करें कि बाइबल का अध्ययन कैसे करना है 25

अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना - भाग दो

IV. शुद्ध अनुग्रह के सुसमाचार में स्थिर शिष्य 29

पाठ 8 शुद्ध अनुग्रह के सुसमाचार में स्थिर शिष्य 29

V. परमेश्वर की अनंत योजना में स्थिर शिष्य 35

पाठ 9 परमेश्वर की अनंत योजना में स्थिर शिष्य 35

VI. परमेश्वर के घराने में स्थिर शिष्य 40

पाठ 10 परमेश्वर के घराने में स्थिर शिष्य 40

VII. शिष्यों का मसीह में और मसीह के साथ स्थिर होना 45

पाठ 11 मसीह में आपका जीवन 45

पाठ 12 मसीह के साथ आपका जीवन 48

पाठ 13 प्रभु के साथ दैनिक शांत समय 51

पाठ 14 प्रार्थना और आराधना के लिए व्यावहारिक सहायता 52

यीशु के साथ 31 दिनों की मुलाकात 59

बाइबल पठन सारणी 60

VIII. शिष्यों का अगुवाई में स्थिर होना 66

''सभी परिपक्वता के लिए, कुछ अगुवाई के लिए'' 66

आगे बढ़ाएं! 68

अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना - भाग एक

इस पाठयक्रम का उद्देश्य आरंभिक कलीसिया द्वारा उपयोग किए जाने वाले अति-सांस्कृतिक और असामयिक सिद्धांतों (ऐसे बाइबल सिद्धांत जो संस्कृति और समय से आगे के थे) की स्थापना करना है, जिन्होंने ऐसे सामर्थी शिष्यों का उत्पादन किया जिन्होंने मसीह के लिए अपने समय के संसार को उलट दिया था (प्रेरितों के काम 17:6)। नीचे दिए गए मानचित्र को देखने पर यरूशलेम से रोम तक सुसमाचार के फैलने में कितने वर्ष लगे? जी हां, केवल 25 वर्ष। मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आप संसार की किसी भी ऐसी कलीसिया को जानते हैं जो आज इस तरह से प्रगति कर रही और प्रभाव डाल रही है? यह ध्यान में रखें कि आज जिस तरह आधुनिक यात्रा, तकनीक और प्रशिक्षण संस्थान हमें उपलब्ध हैं, वैसे उन्हें नहीं थे। शिष्यों की स्थापना और प्रगति करने के कार्य में आरम्भिक कलीसिया की तुलना में, उससे श्रेष्ठ नमूने को पाना कठिन होगा।

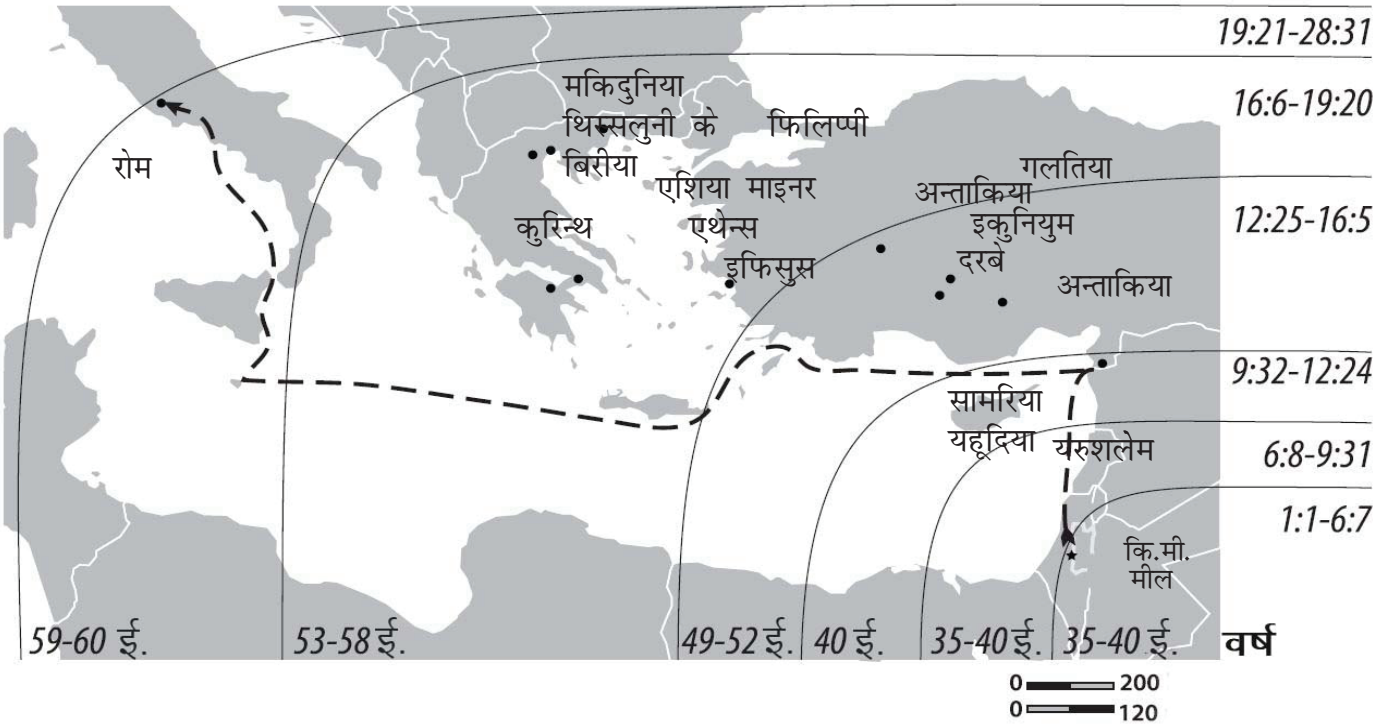

नया विश्वासी/कलीसिया

स्थिर विश्वासी/कलीसिया

इस नियमावली का अभिप्राय आज के शिष्यों में इन सिद्धान्तों को डालना है जिससे हम भी अपने संसार में अद्भुत परिणामों को देख पाएं। प्रेरितों के काम 14:21-22 में हम इन सिद्धांतों में से एक और नये शिष्यों को ''स्थिर'' या स्थापित करने या ''दृढ़'' करने से संबन्धित बहुत से संदर्भों को देखते हैं। अक्षरश: अर्थ एक खूंटे के समान उन्हें उनके विश्वास में ''स्थिर'' या ''तीव्र'' करना है। हमारा उद्देश्य नये शिष्यों के संग संग रहने (खूंटा लगाने) का है जिससे वे स्वयं खड़े हो सकते हैं। (दाईं ओर के चित्र को देखें)।

आप स्वयं कैसे साहस के साथ खड़े हो सकते और अन्य शिष्यों की वैसा ही करने में कैसे सहायता कर सकते हैं? सबसे पहले, आपको बाइबल के इन मुख्य सिद्धांतों को जानना है जो एक शिष्य को स्थिर और दृढ़ करते हैं। आप शास्त्रवचन के अधि कार और सामर्थ में एक ठोस नींव को डालना चाहते हैं (प्रेरितों के काम 18:24-28) पाठ 1, और पवित्र आत्मा में (प्रेरितों के काम 19:1-7) पाठ 2, वचन और आत्मा में एक मज़बूत नींव शिष्यों को बढ़ने और फलवंत होने में सक्षम करेगी।

शिष्यों का अधिकार और भरपूरी

पाठ 1

वचन का अधिकार और भरपूरी

परमेश्वर का वचन या ''शास्त्रवचन'' ही आपकी नींव है। किसी और चीज़ पर निर्माण करने पर जल्द ही या बाद में उसका ढह जाना संभव होगा। जब आप परमेश्वर को उसके वचन को बोलते हुए सुनेंगे, तब आप यह जान पाएंगे कि परमेश्वर का जीवित वचन पर्याप्त है और आपको वह *हर वस्तु* देगा, जिसकी ज़रूरत आपको अपनी बुलाहट को पूरा करने के लिए होगी **(2 तीमुथियुस 3:16-17)।**

अवलोकन और मनन: निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरते हुए उत्तर दें:

परमेश्वर का वचन क्या है?

1. भजन संहिता 12:6 में दाऊद परमेश्वर के वचनों का वर्णन कैसे करता है? .....
2. भजन संहिता 18:30 में, परमेश्वर का वचन क्या होने को प्रमाणित करता है? .....
3. भजन संहिता 138:2 के अनुसार परमेश्वर ने किसे सभी चीज़ों से अधिक महत्व दिया है? .....
4. मत्ती 24:35 के अनुसार, क्या नहीं टलेगा? .....
5. यूहन्ना 17:17 के अनुसार परमेश्वर का वचन क्या है? .....
6. 1 थिस्सलुनीकियों 2:13 में, उन्होंने परमेश्वर के वचन को कैसे ग्रहण किया? ''.....का नहीं परन्तु .. ..।''
7. 2 तीमुथियुस 3:16 के अनुसार, शास्त्रवचन का कितना हिस्सा परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है?.....
8. इब्रानियों 4:12 के अनुसार, परमेश्वर के वचन की 5 विशेषतएं बताएं:

   क. .....

   ख. .....

   ग. .....

   घ. .....

   ड. .....

9. 2 पतरस 1:19-21 के अनुसार यदि पवित्रशास्त्र किसी की विचारधारा या मनुष्य की इच्छा पर आधारित नहीं है तो वे (भविष्यद्वक्ता) परमेश्वर की ओर से कैसे बोलते थे? .....

.....(पृष्ठ 11 के बिल्कुल ऊपर दिए गये चित्र को देखें)।

परमेश्वर का वचन क्या करता है?

10. भजन संहिता 19:7-14 पढ़कर परमेश्वर के वचन के कम से कम छह लाभों की सूची बनाएं: .

क. .....

ख. .....

ग. .....

घ. .....

ड. .....

च. .....

11. भजन संहिता 119:9-11 के अनुसार एक युवक अपने आप को कैसे शुद्ध रख सकता है? .....
....

12. भजन संहिता 119:105 में, परमेश्वर का वचन आपके पावों के लिए क्या है? ..... आपके मार्ग के लिए?
.....

13. यशायाह 55:11 कहता है कि परमेश्वर का वचन ..... ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह ..... करेगा, और जिस काम के लिए मैंने उसका भेजा है उसे वह ..... करेगा।

14. यिर्मयाह 23:29 के अनुसार, परमेश्वर का वचन किसकी तरह है? ..... और ..... अत: परमेश्वर का वचन क्या कर सकता है? .....

15. मत्ती 4:4 के अनुसार, निम्नलिखित पद को पूरा करें: ''मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु .....।''

16. लूका 4:4, 8, 12 में यीशु ने शैतान को हराने के लिए किसका उपयोग किया? ..... आपने कैसे जाना कि इससे शैतान हार गया था? (4:13-14) .....

17. 2 तीमुथियुस 3:16-17 के अनुसार आपको पवित्रशास्त्र से किन चार बातों का लाभ हो सकता है?

क. .....

ख. .....

ग. .....

घ. .....

क्या केवल पवित्रशास्त्र ही परमेश्वर के जन को पूरी तरह से तैयार करने में पर्याप्त है (2 तीमुथियुस 3:17)?.....
.....

18. 2 पतरस 1:3-4 के अनुसार, परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ आपको कैसे दी गई है? .....

आप परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी कैसे हो सकते है? .....

परमेश्वर का वचन कौन है?

19. यूहन्ना 1:1 के अनुसार, आदि अर्थात् आरम्भ में क्या था? ..... वचन कौन हैं? ..... वचन क्या बना (वचन 14)? ..... वह कहाँ रहा?

20. यूहन्ना 5:39 के अनुसार पवित्रशास्त्र किसकी गवाही देता हैं?.....

21. यूहन्ना 6:63 के अनुसार, यीशु के वचन क्या हैं? ..... और .....

22. यूहन्ना 14:6 के अनुसार, सत्य कौन हैं? .....

वचन पर चलने वाले बनो

23. एज्रा 7:8-10 के अनुसार उन तीन बातों को लिखें जिन पर एज्रा ने अपना मन लगाया था:

    क. .....

    ख. .....

    ग. .....

24. मत्ती 7:24-29 में, बुद्धिमान और मूर्ख दोनों ही व्यक्तियों ने परमेश्वर का वचन सुना और अपना अपना घर बनाया। किस बात के कारण उनमें से एक बुद्धिमान और दूसरा मूर्ख बना? .....

25. प्रेरितों के काम 17:11 से, बिरीया के यहूदियों के अधिक भले होने के दो कारण दें? ..... और .....

    .....

    वे पवित्रशास्त्र से क्यों ढूंढते थे?.....

26. याकूब 1:22 के अनुसार, हमें सुनने वाला ही नहीं, परन्तु वचन पर .....बनना है।

    <u>विचार-विमर्श</u> : दूसरे शिष्यों के साथ आपने जो सीखा है उसके अन्तर को देखें और उसकी तुलना करें और यदि दूसरों से आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धान्त को सीखा है उसे लिखें। .....

    .....

    .....

    .....

    आपको अपने .जीवन में परमेश्वर के वचन के अनुसार किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है? .....

    .....

    .....

    .....

    <u>व्यावहारिकता:</u> आप अपने जीवन में इन परिवर्तनों को कब और कैसे करेंगे?.....

    .....

    .....

    .....

पाठ 2

आत्मा का अधिकार और भरपूरी

आज कलीसिया में जिस तरह के जीवन और सेवकाई को अधिकांशत: देखा जाता है वह पिन्तेकुस्त के पहले की तरह कार्य करता दिखता है (पवित्र आत्मा के आने से पहले)। प्रेरितों के काम 19:1-7 में उन्होंने पवित्र आत्मा के बारे में सुना तक नहीं था। हम आपके जीवन और कलीसिया में पिन्तेकुस्त के बाद की भूमिका और पवित्र आत्मा के कार्य को समझाना चाहते हैं कि आप उसे अच्छी तरह से समझ पाएं। बहुत से हैं जो मसीह के देहधारण, मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान की शिक्षा तो देते हैं, परन्तु उसके स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त को अनदेखा करते हैं। **पिन्तेकुस्त के बिना पुनरुत्थान को सामर्थ, रूपान्तरण, महत्वपूर्ण गवाही और कोई फल नहीं होगा।**

<u>अवलोकन और मनन:</u> निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरते हुए उत्तर दें:

1. आपके विचार से उत्पत्ति 1:1-2 में परमेश्वर का आत्मा पृथ्वी के ऊपर क्यों मँडराता था?.....
2. 2 राजा 6:13-18 के अनुसार एलीशा का सेवक अपने आस-पास के पहाड़ को अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ क्यों नहीं देख पाया था? (इफिसियों 1:16-19 पढ़ें) .....
3. यहेजकेल 37:14 में परमेश्वर ने यहेजकेल से क्या प्रतिज्ञा की थी? .....
4. यूहन्ना 1:32-33 के अनुसार, यूहन्ना ने जब आत्मा को स्वर्ग पर से उतरते देखा तो उसने उसका वर्णन कैसे किया था? .

   .....

   यूहन्ना ने जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु यीशु कैसे बपतिस्मा देगा? .....

   .....
5. यूहन्ना 3:3-8 के अनुसार परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए नीकुदेमुस को क्या करने की ज़रूरत थी?.....

   .....आत्मा से नया जन्म लेने का क्या अर्थ है?.....
6. यूहन्ना 7:37-39 ''उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी'' का क्या अर्थ है?.....

   .....

   आपके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ कैसे बह सकती हैं? .....

   आत्मा क्यों नहीं दिया गया था? .....

7. आपके विचार से यूहन्ना 14:25-26 में पवित्र आत्मा को सहायक क्यों कहा गया है?.....
.....

8. यूहन्ना 16:7-12 के अनुसार, आपके विचार से यीशु का पिता के पास जाना हमारे लिए क्यों अच्छा है? .....
.....

पवित्र आत्मा आकर क्या करेगा (13-14)? .....
.....

9. प्रेरितों के काम 1:8 के अनुसार जब पवित्र आत्मा शिष्यों पर उतरेगा तो उन्हें क्या मिलेगा? .....
..... वे क्या हो जाएंगे? ..... वे कहाँ गवाह होंगे?.....
.....

10. प्रेरितों के काम 2:1-4 में शिष्य किस दिन पवित्र आत्मा से भरे गए थे? ..... इस घटना का वर्णन करें? .....
.....

11. प्रेरितों के काम 5:3 के अनुसार, हनन्याह ने किससे झूठ बोला था?..... पवित्र आत्मा एक व्यक्ति ही नहीं, परन्तु प्रेरितों के काम 5:4 के अनुसार, वह कौन है? .....

12. प्रेरितों के काम 19:1-6 में शिष्यों को पवित्र आत्मा क्यों नहीं मिला था? .....
.....

13. 1 कुरिन्थियों 12:13 के अनुसार शिष्यों को किसका बपतिस्मा मिला था?.....
यह कब होता है (प्रश्न '5.' और यूहन्ना 3:3-8 देखें)?.....

14. इफिसियों 1:13-14 के अनुसार, एक शिष्य पर पवित्र आत्मा की छाप कब लगती है?.....
..... पवित्र आत्मा शिष्य को किस बात का आश्वासन देता है?.....
.....

15. इफिसियों 3:20 के अनुसार, पवित्र आत्मा की सामर्थ कहाँ कार्य करती है?.....
..... वह आपमें और आपके माध्यम से क्या करने में सक्षम है? .....
.....

16. रोमियों 7 कितनी बार ''मैं'' और ''मुझे'' शब्दों का उपयोग करता है?.....
..... 7:17-24 पदों के अनुसार, यह आपको आपके (''मैं'' और ''मुझे'') के बारे में क्या बताता है?.....
.....

17. रोमियों 8 कितनी बार आत्मा के बारे में बताता है?..... 8:37-39 पदों के अनुसार, यह ''मैं'' और ''मुझे'' की तुलना में आपके भीतर वास करने वाले आत्मा के बारे में क्या बताता है?.....
.....

18. गलातियों 3:2-3 में, उन्होंने आत्मा को कैसे पाया था? .....
उन्होंने कैसे आरंभ किया? ..... वे क्या करने का प्रयास कर रहे हैं?
.....

19. गलातियों 5:16-25 पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

आत्मा में चलने पर आप क्या पूरा नहीं करेंगे?.....

आत्मा के चलाए चलने पर आप किसके अधीन नहीं हैं?.....

शरीर के काम क्या हैं?.....

आत्मा के फल क्या हैं?.....

आत्मा के अनुसार रहने पर, हमें और क्या करना होगा (5:25)?.....

.....

.....

20. इफिसियों 4:30 में, आपसे क्या न करने को कहा गया है?.....

''शोकित'' को आप कैसे परिभाषित करेंगे?.....

21. इफिसियों 5:18 में, आपको किससे परिपूर्ण होने को कहा गया है?.....आपके विचार से ''परिपूर्ण'' होने का क्या अर्थ है? .....

22. प्रेरितों के काम 5:32 के अनुसार पवित्र आत्मा किन्हें दिया जाता है?.....

23. प्रेरितों के काम 7:51 के अनुसार, पवित्र आत्मा का विरोध करने का क्या अर्थ है?.....

आप कैसे उसका विरोध करते हैं? .....

.....

24. 1 थिस्सलुनीकियों 5:19 में आपसे क्या न करने को कहा गया है?.....

आपके विचार से ''बुझाने'' का क्या अर्थ है?.....

25. बाइबल का आरंभ उत्पत्ति 1:2 में आत्मा से और अंत प्रकाशितवाक्य 22:17 में दिए एक निमंत्रण के साथ होता है। जो प्यासा हो वह....., और जो कोई चाहे वह.....।

<u>विचार विमर्श:</u> अन्य शिष्यों के साथ आपने जो सीखा है उसके अन्तर को देखें और उसकी तुलना करें और दूसरों से आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें।.....

.....

आपको अपने जीवन में पवित्र आत्मा के अनुसार किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है? .....

.....

.....

<u>'व्यावहारिकता:</u> आप अपने जीवन में इन परिवर्तनों को कब और कैसे करेंगे? .....

.....

.....

.....

.....

II. शिष्यों की आज्ञाकारिता, सदस्यता और यादगारी

पाठ 3

जल का बपतिस्मा (प्रेरितों के काम 2:41 और 10:43-48)

बपतिस्मा एक बाहरी संस्कार है। जिसका आरंभ मसीह ने कलीसिया में संगठित करने को किया था। उद्धार के समय में यह एक व्यक्ति के आध्यात्मिक बपतिस्मे को दिखाता है, परन्तु इसके साथ ही उन्हें प्रतीकात्मक रूप से सुसमाचार का अनुभव करने

मृत्यु

गाड़ा जाना

पुनरुत्थान

की अनुमति देता है। बपतिस्मा प्रभु की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारिता का एक कार्य है और इसके कारण कोई विशेष अनुग्रह नहीं दिया जाता है, तथापि इस आज्ञा का पालन करना प्रभु यीशु मसीह के प्रेम, अनुग्रह और ज्ञान में एक व्यक्ति की वृद्धि का प्रमाण है।

<u>अवलोकन और मनन:</u> निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरते हुए उत्तर दें:

1. मत्ती 3:13-17 के अनुसार, यीशु को यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा बपतिस्मा क्यों दिया गया था?.....
   .....
   आकाश और पिता की क्या प्रतिक्रिया थी? .....
2. लूका 3:16 के अनुसार, यूहन्ना ने जल का बपतिस्मा दिया। कौन यूहन्ना से अधिक शक्तिशाली है? .....
   ..... वह आपको किससे बपतिस्मा देगा? ..... और.....
   .....
3. प्रेरितों के काम 11:16 में पतरस ने क्या याद किया? .....
4. हमारे जातियों के पास जाने पर, मत्ती 28 :19-20 में दी गई ''महान आज्ञा'' के अनुसार हमें किन 3 बातों को करने की आज्ञा दी गई है? ....., और .....
   .....
5. प्रेरितों के काम 2:41 में, वचन ग्रहण करने वालों ने उसके बाद क्या किया? .....
6. प्रेरितों के काम 8:12-13 में विश्वास करने के बाद पुरुषों और स्त्रियों ने क्या किया? .....
   ..... कब?.....

7. प्रेरितों के काम 8:36 में, खोजे ने क्या देखा?.....

8. प्रेरितों के काम 8:38-39 में, फिलिप्पुस और खोजा किसमें उतरे? .....

   खोजे के बपतिस्मा लेने के बाद, वे किसमें से बाहर आए? .....

   अपने मार्ग पर जाते हुए खोजे ने क्या किया? .....

9. प्रेरितों के काम 16:30-34 में दारोगा और उसके परिवार ने कब बपतिस्मा लिया था? .....

   .....

   बपतिस्मा लेने के बाद दारोगा और उसके परिवार ने क्या किया?.....

10. प्रेरितों के काम 18:8 में, कुरिन्थ वासियों ने विश्वास करने के बाद क्या किया? .....

11. रोमियों 6:3-11 के अनुसार जल का बपतिस्मा किसका प्रतीक है? .....

    .....

    .....(पृष्ठ 14 के शीर्ष पर दिए चित्र को देखें)

12. कुलुस्सियों 2:12 के अनुसार, आपको किसके साथ गाड़ा गया था?..... आपको किसके साथ जिलाया गया? ..... किसके सामर्थी कार्य ने इसे पूरा किया? .....

13. इफिसियों 4:4-5 के अनुसार, कितनी तरह के बपतिस्मे हैं? .....

14. 1 कुरिन्थियों 12:12-13 में, हम सब ने ..... देह और ..... आत्मा में बपतिस्मा लिया है।

15. प्रेरितों के काम 10:47-48 के अनुसार इन विश्वासियों ने जल के बपतिस्मे से पहले क्या पाया था?..... ..... किसके नाम से बपतिस्मा दिया गया था? .....

    <u>विचार-विमर्श:</u> अन्य शिष्यों के साथ आपने जो सीखा है उसके अंतर को देखें और उसकी तुलना करें और दूसरों से आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें।.....

    .....

    .....

    आपको अपने जीवन में जल के बपतिस्मे के अनुसार किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है? .....

    .....

    .....

    .....

    व्यावहारिकता : आप अपने जीवन में इन परिवर्तनों को कब और कैसे करेंगे? .....

    .....

    .....

    .....

    .....

    .....

    .....

पाठ 4

एक दूसरे के अंग (1 कुरिन्थियों 12:13)

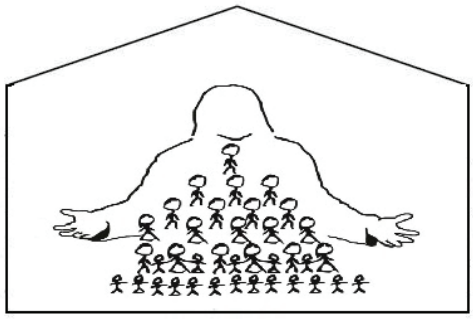

आज कलीसिया में एक व्यक्ति की सदस्यता अक्सर व्यक्ति के उद्धार और बपतिस्मे को लेकर संदेहास्पद रहती है। परमेश्वर के वचन से सुनने पर, आप मसीह की देह, परमेश्वर के घराने में, मसीह की अगुवाई और पवित्र आत्मा के निर्देशन में एक दूसरे के प्रति प्रत्येक व्यक्ति की वचनबद्धता को देखेंगे। आप अब अनाथ नहीं हैं; इसके विपरीत, आपको परमेश्वर के परिवार में ग्रहण किया गया और कलीसिया में बपतिस्मा दिया गया है जो मसीह की देह है।

<u>अवलोकन और मनन</u>: निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरते हुए उत्तर दें:

1. 1 कुरिन्थियों 12:12-14, 27 के अनुसार, मसीह की देह कौन है? .....

   पद 12 से इन रिक्त स्थानों को भरें: क्योंकि जिस प्रकार देह तो ..... है और उसके अंग ....से हैं उसी प्रकार मसीह भी है।

   मसीह की देह में आपको किसने बपतिस्मा दिया (13)? .....

   पद 25-27 के अनुसार, अंग ''एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है तो सब ....। और यदि एक अंग की बड़ाई होती है। तो उसके साथ सब .... । इसी प्रकार तुम सब मिलकर ..... की .... हो।''

2. गलातियों 5:13 के अनुसार, मसीह की देह के सदस्यों को एक दूसरे के .....बनना हैं।
3. गलातियों 6:2 के अनुसार, मसीह की देह के सदस्यों को एक दूसरे का भार ..... है।
4. 1 थिस्सलुनीकियों 4:18 के अनुसार, मसीह की देह के सदस्यों को एक दूसरे को .....देनी है और 5:11 में, मसीह की देह के सदस्यों को एक दूसरे को ..... देनी है और एक दूसरे की ... . का कारण बनना है।
5. रोमियों 12:5-8 को अनुसार, मसीह की देह के सदस्य आपस में एक दूसरे के ..... हैं। मसीह की देह के सदस्यों के कुछ कार्य और वरदान कौन से हैं?..... ....
6. रोमियों 13:8 के अनुसार, मसीह की देह के सदस्यों को एक दूसरे से ..... करना है।

7. रोमियों 15:5 के अनुसार, मसीह की देह के सदस्यों को एक दूसरे के साथ ..... होकर रहना है, (पद 7) जैसे मसीह ने तुम्हें ग्रहण किया वैसे ही तुम्हें भी एक दूसरे को ..... करना है और (पद 14) एक दूसरे को .....में सक्षम हो।

8. इफिसियों 4:2 के अनुसार, मसीह की देह के सदस्यों को प्रेम से एक दूसरे को ..... है।

9. इफिसियों 5:21 के अनुसार, मसीह की देह के सदस्यों को एक दूसरे के ..... रहना है।

10. फिलिप्पियों 2:3-4 में मसीह की देह में कौन से अंग या सदस्य अधिक महत्वपूर्ण हैं? ..... हमें किनके हित की भी चिन्ता करनी चाहिए (4)?

11. यूहन्ना 13:14-15 में यीशु ने आपको क्या नमूना दिया? .....क्या आपको उसके नमूने पर चल कर एक दूसरे के पांव धोने चाहिए? ..... क्यों या क्यों नहीं? ....

12. कुलुस्सियों 3:13 के अनुसार मसीह की देह के सदस्य एक दूसरे को कैसे क्षमा करते हैं? .... क्या एक दूसरे को क्षमा करना एक विकल्प है? .....

13. याकूब 5:16 में 2 ''एक दूसरे'' क्या हैं? ..... और..... .....

14. 1 पतरस 5:5 के अनुसार मसीह की देह के सदस्यों को एक-दूसरे के प्रति कैसे रहना है? .... क्यों .....

<u>विचार-विमर्श</u>: अन्य शिष्यों के साथ आपने जो सीखा है उसके अंतर को देखें और उसकी तुलना करें और दूसरों से आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें। ....

मसीह की देह के अंग या सदस्य होने पर आपको अपने जीवन में किन परिवर्तनों को करने ज़रूरत है? ....

<u>व्यावहारिकता</u>: आप अपने जीवन में इन परिवर्तनों को कब और कैसे करेंगे? ....

पाठ 5

प्रभु भोज (प्रेरितों के काम 2:42)

फसह का मेम्ना

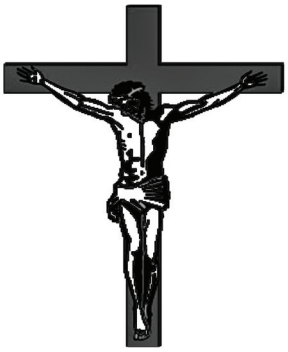

नई वाचा

पुनरुत्थान

रोटी

दाखरस

उसके लौटकर आने तक

प्रभु भोज के मनाने पर परंपरा और दस्तूर अक्सर इसमें पाए जानेवाले जीवन और केन्द्र को नीरस बना देते हैं। इस स्मरणीय अवलोकन में हमें रोटी (प्रतीकात्मक रूप से उसकी देह - जो वह है) और कटोरे (प्रतीकात्मक रूप से उसका लहू - जो उसने किया) को बड़े धन्यवाद, गंभीरता से स्वयं की जांच करने और भाई चारे के प्रेम से उसके लौटकर आने के समय तक लेने का निर्देश दिया गया है। यह स्मरणीय अवलोकन हमें सुसमाचार का स्वाद चखने का अवसर देता है।

<u>अवलोकन और मनन</u>: निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरते हुए उत्तर दें:

1. निर्गमन 12:12-14 के अनुसार, लहू को देखकर परमेश्वर क्या करता? .....
   .....
   द्वार पर लहू के न होने पर परमेश्वर क्या करता? .....
   इस दिन परमेश्वर के लोगों के लिए क्या होना था? .....
   1 कुरिन्थियों 5:7 के अनुसार हमारे फसह का मेम्ना कौन है? .....
2. मत्ती 26:26-28 के अनुसार, यीशु ने रोटी को क्या बताया? ..... कटोरा किसे दिखाता है?
   .....
3. लूका 22:19 के अनुसार यीशु ने प्रभु भोज की शुरुआत क्यों की?.....
4. यूहन्ना 6:33-35 और 48-51 के अनुसार यीशु कौन है?.....
   .....
   .....
5. यशायाह 53:5 और 1 पतरस 3:18 के अनुसार यीशु ने क्या किया?.....
   .....

6. प्रेरितों के काम 2:42 में आरंभिक कलीसिया क्या करती थी? .....

7. प्रेरितों के काम 20:7, 11 के अनुसार आरंभिक कलीसिया सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होने पर क्या करती थी? .....
.....

8. 1 कुरिन्थियों 11:23-30 में, शिष्य प्रभु भोज पालन क्यों करते थे (24-25)? .....
.....

रोटी खाने और कटोरे में से पीने पर आप क्या घोषणा करते हैं (26)?.....
.....

आप अनुचित ढंग से रोटी को कैसे खा सकते और कटोरे में से कैसे पी सकते हैं (27-29)? .....
.....

क्या किसी तरीके से आप स्वयं को योग्य बना सकते हैं (27-29)?..... प्रभु-भोज खाने और पीने पर शिष्यों को क्या करना चाहिए (28)? .....
.....

अत: आप किसकी देह को पहचानते हैं (29)? ..... कौन योग्य है? .....
.....

9. बहुत से लोग निर्बल और रोगी क्यों थे, और कुछ तो मर भी गए थे (29-30)? .....
....
.....

<u>विचार-विमर्श:</u> अन्य शिष्यों के साथ आपने जो सीखा है उसके अंतर को देखें और तुलना करें और दूसरों से यदि आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें। .....
.....
.....

प्रभु भोज के संबंध में आपको अपने जीवन में किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है? .....
.....
.....
.....

<u>व्यावहारिकता:</u> आप अपने जीवन में कब और कैसे इन परिवर्तनों को करेंगे? .....
.....
.....
.....

<u>व्यक्तिगत गवाही</u>: प्रभु यीशु पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास लाने के समय से, क्या प्रभु भोज के बारे में आपकी समझ बदली और बढ़ी है? .....
.....
.....
.....

पाठ 5 क

प्रार्थना (प्रेरितों के काम 2:42)

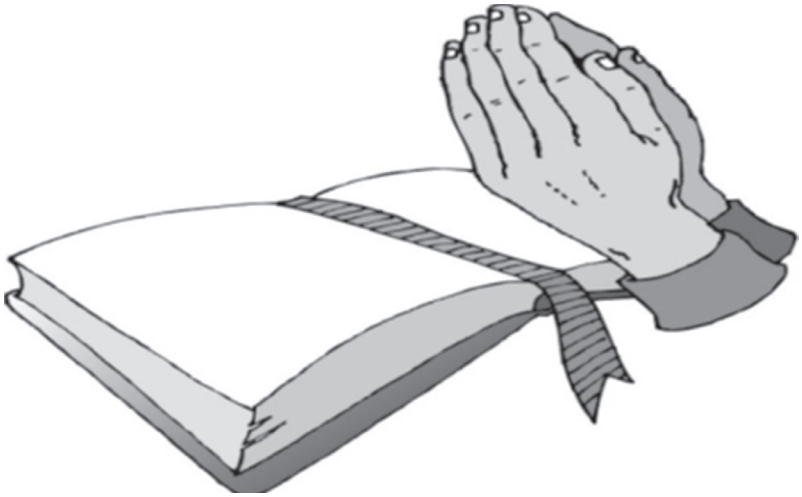

प्रभु भोज और अन्य बहुत सी परंपराएं और नियम प्रार्थना के जीवन और महत्व को अक्सर निम्न कर सकते हैं। परमेश्वर के साथ हमारा संबंध प्रार्थना का केंद्र है; प्रार्थना में हमारा परमेश्वर पिता से बात करना और अपनी इच्छा को उसकी इच्छा के अधीन करना आता है। प्रार्थना यीशु मसीह के अनुयायियों के लिए परमेश्वर को अपने निवेदन बताने, आराधना, स्तुति करने, भावनाओं और अभिलाषाओं को बताने का साधन है। यह सुने जाने वाली खामोश, निजी या सार्वजनिक, औपचारिक या अनौपचारिक हो सकती है। मुझे जे.सी. लैम्बर्ट की प्रार्थना की यह परिभाषा पसंद है, ''मसीही प्रार्थना का नये नियम में संपूर्ण अर्थ एक ऐसी प्रार्थना से है जो परमेश्वर से पिता के रूप में, मसीह के नाम में जो मध्यस्थ है, और हमारे भीतर वास करने वाले आत्मा के सक्षम किये जाने वाले अनुग्रह के द्वारा की जाती है।'' 1-5 पाठों में हम अब तक आरंभिक कलीसिया के इस शक्तिशाली व प्रभावी नमूने का अनुसरण करते रहे हैं, आइए देखें कि पाठ 5क में लूका कैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रार्थना के कार्यों का विवरण देता है। आपको प्रार्थना और पवित्र आत्मा की सामर्थ के बीच संबंध स्पष्ट रीति से दिखाई देगा। प्रार्थना से संबंधित अतिरिक्त बाइबल के संदर्भ और सहायता पृष्ठ 52 पर पाठ 14 में ''प्रार्थना और आराधना के लिए व्यावहारिक सहायता'' में मिल सकते हैं।

<u>अवलोकन और मनन</u>: निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरते हुए उत्तर दें:

1. प्रेरितों के काम 1:14 में वर्णित आरंभिक कलीसिया की प्रार्थना सभा के बारे में बताएं?.....
   .....

   2:1-4 के अनुसार क्या हुआ था? .....
   .....
   .....

2. हमारे प्रार्थना करने पर, 1:24 के अनुसार परमेश्वर क्या जानता है?.....
   .....

   प्रभु ने चेलों पर क्या प्रकट किया? .....
   .....

3. 2:42 में, आरम्भिक कलीसिया प्रेरितों से शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने और ..... करने के प्रति समर्पित थी। उनके प्रार्थना करने के बाद क्या हुआ (43)? .....
.....

4. पतरस और यूहन्ना (3:1) और पौलुस (22:17) मंदिर में क्या कर रहे थे? .....

5. 4:24 के अनुसार विश्वासी परमेश्वर को क्या कहकर संबोधित करते थे? .....

   4:29 के अनुसार, उनकी क्या विनती थी? ..... 4:31 के अनुसार उनकी प्रार्थनाओं का क्या परिणाम हुआ? .....

6. प्रेरितों ने सेवकों (6:6) और प्राचीनों (14:23) को प्रभु को कैसे सौंपा था? .....
.....

7. जिस समय वे स्तिफनुस पर पत्थरवाह कर रहे थे, उसने 7:59 के अनुसार प्रभु यीशु से अपने लिए क्या करने को कहा था? ..... 7:60 में, उसने प्रभु से अपने सताने वालों के लिए क्या करने को कहा था? .
.....

8. यरूशलेम के प्रेरितों ने पतरस और यूहन्ना को 8:15 के अनुसार सामरिया क्यों भेजा? .....
.....

9. प्रेरितों के काम 9:40-41 में जब पतरस ने घुटने टेककर तबीता के लिए प्रार्थना की तब उसके साथ क्या हुआ? .....
.....
.....
.....

10. 10:1-2 में किसने परमेश्वर से लगातार प्रार्थना की? ..... 10:4 के अनुसार उसकी प्रार्थनाओं का क्या हुआ? ..... आप कैसे जानते हैं कि कुरनेलियुस की प्रार्थनाएँ सुनी गई थीं (30-31)? .....

11. जिस समय पतरस बंदीगृह में था, 12:5,12 के अनुसार कलीसिया लौ लगाकर क्या कर रही थी? .....
..... 12:7-10 के अनुसार पतरस के साथ क्या हुआ?.....

    चूँकि याकूब को पहले ही मार डाला गया था (12:2), आपके विचार से क्या कलीसिया पतरस की रिहाई की आशा कर रही थी (देखें 12:14,15)? .....

12. 13:3 के अनुसार अन्ताकिया की कलीसिया ने बरनबास और पौलुस को कैसे विदा किया? .....
.....

13. 16:13 के अनुसार पौलुस और सीलास नदी के किनारे क्यों गए थे? ..... स्थान क्या कहलाता था (16:13, 16)? ..... प्रभु ने लुदिया के मन को क्यों खोला (14)? .....
.....
.

14. 16:25 के अनुसार, पौलुस और सीलास बेंतों से पीटे जाने और बंदीगृह में डाल दिए जाने के बाद क्या कर रहे थे? .... और .....33-34 के अनुसार फिलिप्पी दारोगा और उसके घराने का क्या हुआ? .....

15. 20:36-38 और 21:5-6 में प्रार्थना करने का क्या कारण था?..... आपके विचार से उन्होंने क्यों प्रार्थना की? .....

16. 27:35 में पौलुस की प्रार्थना का वर्णन करें। .....

    धन्यवाद देने का क्या परिणाम निकला था (36)? .....

    .....

    .....

17. 28:8 में पौलुस के प्रार्थना करने पर पुबलियुस के पिता का क्या हुआ? .....

18. अब हम यह देखते हैं कि आरम्भिक कलीसिया क्यों केवल 25 वर्षों में यरूशलेम से रोम तक सुसमाचार को लेकर गई और उसने अपने समय के संसार को उलट कर रख दिया। अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना में आगे बढ़ने पर आप विषय-वस्तु में बहुत सी प्रार्थनाओं को देखेंगे। प्रार्थना पर इस पाठ के समापन में 1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18 को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरें। मसीह यीशु में परमेश्वर की आपके लिए क्या इच्छा है? सदा .... रहो, (16) ....निरतंर .... में लगे रहो (17), और हर बात में ..... करो (18)।

    <u>विचार-विमर्श</u>: अन्य शिष्यों के साथ आपने आरंभिक कलीसिया से जो सीखा उसके अंतर को देखें और तुलना करें और दूसरों से आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें। .....

    .....

    .....

    प्रार्थना के संबंध में आपको अपने जीवन में किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है? .....

    .....

    .....

    <u>व्यावहारिकता</u>: आप अपने जीवन में कब और कैसे इन परिवर्तनों को करेंगे? .....

    .....

    .....

    .....

III. बाइबल अध्ययन में स्थापित चेले

पाठ 6

बाइबल का अध्ययन कैसे करें पर निर्देश (प्रेरितों के काम 8:26-38)

(मौखिक सिखनेवालों की सहायता के लिए; पृष्ठ 5 देखें)

बाइबल का अध्ययन कैसे करें को सीखने से पहले आरंभ करने पर, प्रेरितों के काम 8:26-38 में फिलिप्पुस और कुशी खोजे की कहानी को पढ़ें और देखें कि क्या आप इस कहानी में से बाइबल अध्ययन के चार मुख्य सिद्धांतों को ले सकते हैं; **अवलोकन** (पद 28), **मनन** (पद 30), **विचार-विमर्श** (पद 31-35) और **व्यावहारिकता** (पद 36-38)।

1 - अवलोकन - ''इसे देखो'' - यह क्या कहता है?

- जानकारी - पता लगाएं कि बाइबल क्या कहती है।
- प्रार्थना करें कि **पवित्र आत्मा** इसे देखने में आपकी सहायता करे।

परमेश्वर के वचन को समझने के लिए **अवलोकन** मुख्य कुंजी है; यह इसे जानने के लिए कि परमेश्वर शास्त्रवचन में क्या कह रहा है अपने मन, हृदय और अविभाजित ध्यान को शास्त्रवचन के उस संदर्भ और उसके आस-पास की विषय वस्तु पर लगाना है। पाठांश को कई बार पढ़ना और स्वयं से यह पूछना कि क्या हो रहा है, कौन शामिल है, यह कहाँ हो रहा है और यह कब हो रहा है; सहायक हो सकता है। पाठांश और विषय-वस्तु को पढ़ने के बाद, अपने अवलोकन का सारांश निकालें।

एक उदाहरण के रूप में, आइए जानें कि बाइबल मत्ती 6:33 में क्या कहती है। पद 33 की विषय-वस्तु को समझने के लिए, आपको सबसे पहले 24-34 पदों को पढ़ना होगा। विषय-वस्तु को पढ़ने के बाद, पद 33 में यीशु जो कह रहा है, उस पर अपने अवलोकन को लिखें। आरंभ करने के लिए निम्नलिखित एक उदाहरण है। आप संभवत: अधिक अवलोकन को शामिल करना चाहेंगे।

आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। इस बारे में चिंता न करना कि हम क्या खाएंगे या क्या पीएंगे या क्या पहनेंगे, परमेश्वर पक्षियों को खिलाता और फूलों को कपड़े पहनाता है और जानता है कि हमें किस चीज़ की ज़रूरत है। पहले उसकी खोज करो और तुम्हें सभी ज़रूरतें या वस्तुएं मिल जाएंगी। अत: कल की या वस्तुओं की चिंता न करो।

2 - मनन - 'इस पर विचार करें' - इसका क्या अर्थ है?

- स्पष्टीकरण - बाइबल के अनुसार अर्थ का पता लगाएँ।
- प्रार्थना करें कि **पवित्र आत्मा** इसे समझने में हमारी सहायता करे।

अपने अवलोकनों पर **मनन** या विचार करना बाइबल के पाठांश के अर्थ को समझने या उसकी व्याख्या करने में आपकी सहायता करता है। इसके अर्थ को समझने का एक तरीका इस पर विचार करना है कि लेखक ने जो लिखा है या कहा है उसके द्वारा वह पाठक से क्या समझे जाने की आशा करता है। याद रखें कि विषय-वस्तु एक विशिष्ट पाठांश के संबंध में आपके बहुत से प्रश्नों का उत्तर देने में आपकी सहायता कर सकती है। आपकी समझने में सहायता करने लिए अन्य बहुमूल्य साधन बाइबल के अन्य पाठांश हैं। अब उपरोक्त चरण 1 में दिए अवलोकनों को देखकर स्वयं से पूछें, ''यीशु पद 6:33 से हमें किस बात से अवगत कराना चाहता है?'' इस पद का क्या अर्थ है? अगले पृष्ठ पर अपने विचारों और मुख्य सिद्धान्तों का सारांश दें:

आप परमेश्वर और वस्तुओं जैसे धन, भोजन या वस्त्रों की सेवा नहीं कर सकते। दो स्वामियों की सेवा करने का प्रयास किये जाने पर, आपके मन और मस्तिष्क के विभाजित हो जाने पर आप चिन्तित ही होंगे। आपको एक ही स्वामी की खोज और सेवा करनी है जो कि परमेश्वर है। उसे ही और केवल उसे ही प्रथम रखें। आप आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं क्योंकि उसे पता है कि आपको किस वस्तु की जरूरत है, और निश्चय ही जब वह पक्षियों को खिला व फूलों को पहना सकता है, तो वह आपकी जरूरतों का भी ध्यान रखेगा।

3. विचार-विमर्श - ''इस बारे में बात करें'' - दूसरों का क्या कहना है?

नोट: यह चरण अधिकांशत: चरण 2 **मनन** से मिलता-जुलता है। यदि आप स्वयं का शांत समय का बाइबल अध्ययन कर रहे हैं तो आप इस विचार-विमर्श चरण का उपयोग नहीं करेंगे। पृष्ठ 55 को देखें।

- बातचीत - पता करें कि दूसरे क्या कह रहे हैं।
- प्रार्थना करें कि **पवित्र आत्मा** दूसरों से सीखने में आपकी सहायता करे।

विचार विमर्श सबसे पुरानी और अभी भी सबसे प्रभावी शिक्षण युक्तियों में से एक है जिसका उपयोग प्रश्नों को पूछने और उत्तर देकर विचारों को निकालने और अनुमानों को चुनौती देने के लिए किया जाता है। विचार-विमर्श का उपयोग आरम्भिक कलीसिया (प्रेरितों 17:2; 17:17; 18:4; 18:19; 19:8-9; 24:25) द्वारा एक दूसरे के जीवन और सेवकाई को चुनौती देने और प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता था। दूसरों के साथ अपने विचारों और उन प्रमुख सिद्धांतों पर चर्चा करें जिन्हें आपने अपने मनन चरण 2 में खोजा था।

विचार-विमर्श: मत्ती 6:33 से आपने जिन सिद्धांतों को जाना है उनकी तुलना अपने आज के जीवन अनुभव से करें। *आज हम अपने जीवनों और साधनों को संसार और प्रभु की सेवा में लगाने व उनमें निवेश करने का प्रयास करते हैं। हमारी संस्कृति और परंपराएं यह कहती हैं कि हमारे पास धन, आनंद और आत्म-पूर्ति, तथा परमेश्वर दोनों हो सकते हैं।*

आप अपने जीवन में क्या परिवर्तन लाना चाहते है? *दो स्वामियों की सेवा करने का प्रयास छोड़ दें और केवल मसीह की सेवा करने की खोज करें। अब मुझे अपनी वस्तुओं के बारे में और चिंता करने की जरूरत नहीं क्योंकि परमेश्वर मेरी सारी ज़रूरतों को जानता है और यदि मैं पहले उसकी खोज करूं तो वह उन्हें पूरा करूंगा।*

4. व्यावहारिकता- 'इसे करें' - मैं इसे अपने जीवन में कैसे लागू कर सकता हूं?

- रूपान्तरण - पता करें कि बाइबल कैसे काम करती है।
- प्रार्थना करें कि **पवित्र आत्मा** ऐसा करने में आपकी सहायता करे।

व्यावहारिकता - बाइबल का अध्ययन करने का परिणाम होनी चाहिए। हम यीशु मसीह के स्वरूप में अपने जीवनों को रूपान्तरित करना और परमेश्वर के साथ अपने संबंध में गहराई तक बढ़ना चाहते हैं। व्यावहारिकता का चरण इन प्रश्नों का उत्तर देने से ही पूरा नहीं हो जाता है, परन्तु पवित्र आत्मा ने आप पर जो प्रकट किया है उसे व्यवहार में लाने, परमेश्वर की सुनने और वचन का पालन करने पर, मसीह में उसके साथ अपने संबन्ध में गहरा होने पर आप परिणामों और अपने जीवन के आनन्द को देखकर चकित रह जाएंगे।

व्यावहारिकता: आप अपने जीवन में कब और कैसे परिवर्तन करेंगे?

मैं परमेश्वर के राज्य में अपने समय और साधनों का निवेश करूंगा और पहले उसकी सेवा करूंगा, अपने व्यक्तिगत सुख और लाभ के लिए नहीं। मैं आज से ही एक स्वामी, मेरे उद्धारकर्ता, जीवित वचन, मसीह, की सेवा का चुनाव किये जाने का आरंभ करूंगा और संसार, स्वयं, धन, वस्तुओं और आनन्द के लिए सेवा करने का प्रयास छोड़ दूंगा।

पाठ 7

इस पर अभ्यास करें कि बाइबल का अध्ययन कैसे करना है

(प्रयास करें) नीचे दिए गए 4 चरणों का उपयोग करते हुए मरकुस 1:35 का अध्ययन करें:

1 - अवलोकन - ''इसे देखें'' - यह क्या कहता है?

- जानकारी - पता करें कि बाइबल क्या कहती है और प्रार्थना करें कि **पवित्र आत्मा** इसे देखने में आपकी सहायता करे।

अवलोकन: मरकुस 1:35 पढ़ें और जो हो रहा है, जो शामिल है, यह कहाँ हो रहा है और कब हो रहा है उसे लिख लें। अब अपने अवलोकनों और उत्तरों का सारांश निकालें।

.....

.....

2 - मनन - ''इस पर विचार करें'' - इसका क्या अर्थ है?

- स्पष्टीकरण-पता लगाएं कि बाइबल के अनुसार क्या अर्थ है और प्रार्थना करें कि **पवित्र आत्मा** इसे समझने में आपकी सहायता करे। याद रखें, यदि दूसरों के साथ इसे करेंगे तो चरण 2 चरण 3 एक साथ होंगे।

मनन : मरकुस 1:35 से आपके अवलोकनों के आधार पर, आपके विचार से लेखक का उद्देश्य पाठकों को उससे क्या परिचित कराने का है उससे जो उसने लिखा है। यह परमेश्वर के वचन में क्यों लिखा है? अब अपने विचारों और स्पष्टीकरण को संक्षेप में प्रस्तुत करें। .....

.....

.....

3 . विचार-विमर्श - ''इसके बारे में बात करें'' - दूसरों का क्या कहना है?

बातचीत - पता करें कि दूसरे क्या कह रहे हैं और प्रार्थना करें कि **पवित्र आत्मा** दूसरों से इसे सीखने में आपकी सहायता करे। याद रखें, अपने व्यक्तिगत अध्ययन में, आप चरण 3 का उपयोग नहीं करेंगे।

विचार-विमर्श: मरकुस 1:35 से आपने जिन सिद्धांतों को सीखा है उनकी तुलना आज अपने जीवन से अनुभव से करें। .....

.....

.....

आपको अपने जीवन में किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है? .....

.....

4 . व्यावहारिकता - ''इसे करें'' - मैं इसे अपने जीवन में कैसे लागू कर सकता हूं?

- रूपान्तरण - पता करें कि बाइबल कैसे काम करती है और प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा ऐसा करने में आपकी सहायता करे।

व्यावहारिकता: अपने जीवन में इन परिवर्तनों को लाने के लिए आप इन सिद्धांतों का उपयोग कैसे कर सकते हैं? अपने जीवन में आप इन परिवर्तनों को कब करेंगे?

.....

.....

अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना - भाग दो

पौलुस के *''मन की उमंग* यह (थी), कि *जहाँ-जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊँ ऐसा न हो कि दूसरों की नींव पर घर बनाऊँ...* (अत:) *जिन्हें (मसीह का) सुसमाचार नहीं पहुंचा, वे ही देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे''* (रोमियों 15:20-21)। पौलुस के सुसमाचार का प्रचार करने के बाद से जिससे शिष्य बने, हम प्रेरितों के काम 14:21-22 में पढ़ते हैं कि पौलुस उन नये शिष्यों या सीखने वालों को ''विश्वास में बनाए रखने के लिए'' कि उन्हें **दृढ़** करे, लौट आया।

पौलुस की रुचि शिष्य बनाने में ही नहीं थी, परन्तु वह शिष्यों को स्थिर व दृढ़ करना चाहता था। ''स्थिर'' या ''दृढ़'' शब्द मूल यूनानी शब्द ''*स्टेरिज़ो*'' से अनुवादित है जिसका अर्थ ''शक्तिशाली बनाना, अपने स्थान पर दृढ़ या तीव्र करना है।'' इसके उपयोग से हमें इस बात की अंतर्दृष्टि मिलती है कि पौलुस नये विश्वासियों को क्या बनाना चाहता था। वह उन्हें उनके विश्वास में ''दृढ़'' या ''तीव्र'' करना चाहता था। इस शब्द का अक्षरश: अर्थ ''किसी चीज़ को सहारा देना या दृढ़ करना है ताकि वह अपने बल पर खड़े होने के योग्य हो सके या अपने बल पर खड़े होने तक कोई इसे इसके स्थान से हटा न पाए।''

उदाहरण के लिए, मूल शब्द का अक्षरश: उपयोग एक खूंटे का वर्णन करने में किया जाता था जो दाखलता को सहारा देता था (निम्नलिखित चित्र को देखें)। इसलिए पौलुस चाहता था कि नये और पुराने शिष्य स्थिर और आत्म-निर्भर हो सकें, जिन्हें आसानी से झूठे सिद्धान्त या शिक्षा से हिलाया या डगमगाया न जा सके।

नया विश्वासी/कलीसिया

स्थिर विश्वासी/कलीसिया

नये शिष्यों को दृढ़ करने के लिए, पौलुस न केवल इन कलीसियाओं में गया, परन्तु उसने यह बताते हुए पत्र भी लिखे कि नये और पुराने शिष्यों को कैसे स्थिर या स्थापित करें। पाठ एक और दो में हमने पढ़ा कि परमेश्वर किसी भी शिष्य को पूरी तरह से स्थिर करने के लिए अपने वचन के द्वारा हमें हमारी ज़रूरत की सारी वस्तुओं को अनुग्रहपूर्वक और भरपूरी के साथ देता है। क्या आपको पता है कि पौलुस ने नये नियम में कितने पत्रों को लिखा है? जी हाँ, 13 पत्र। इन 13 पत्रों को बाइबल में जिस क्रम के साथ रखा गया है क्या आप वैसे ही इनके नामों की सूची दे सकते हैं? पौलुस की स्थिर करने वाली प्रक्रिया को अच्छी तरह से समझने में आपकी सहायता करने को, आइये उसके तेरह पत्रों को वैसे ही क्रम में रखें जैसे उन्हें लिखा गया था, बाइबल के क्रम के अनुसार नहीं, जो कि सबसे बड़े पत्र (रोमियों) से सबसे छोटे पत्र (फिलेमोन) तक है।

उसके पत्र तब उसके लिखे जाने के अनुसार इस क्रम में दिखाई देंगे।

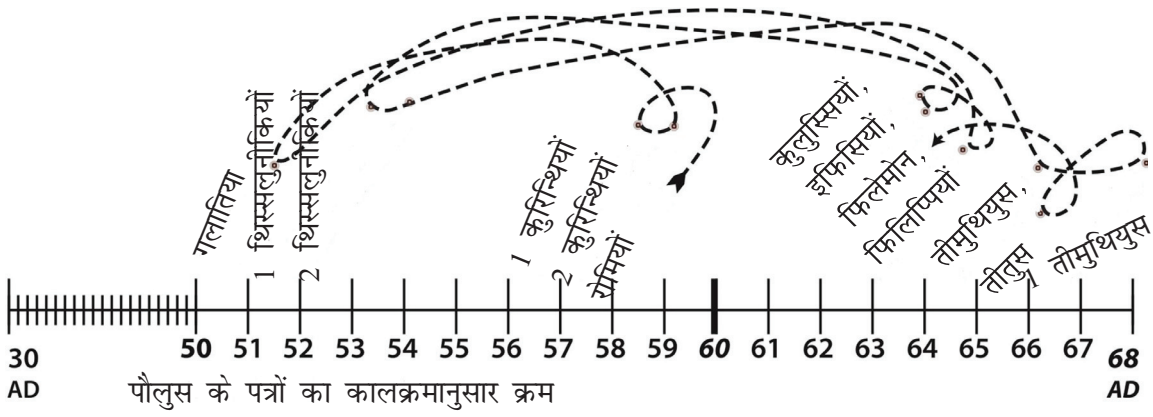

पौलुस के पत्रों का कालक्रमानुसार क्रम

पौलुस के पत्रों का पारंपरिक पठन अनुसार क्रम

आप सोच रहे हैं, यह सब क्यों? उसके पत्रों को कालक्रमानुसार क्यों विभाजित करें, वे विशिष्ट रूप से व प्रक्रियाबद्ध ढंग से निम्नलिखित के अनुसार तीन सरल आध्यात्मिक वर्गों में बांटे जाते हैं :

पौलुस के आरम्भिक पत्र (अनुग्रह के सुसमाचार को स्थिर करने व उसका बचाव करने को उपयोग किए गए)

गलातियों : आत्मा, विश्वास और शुद्ध सुसमाचार की ओर लौटना

1 और 2 थिस्सलुनीकियों : सुसमाचार में दृढ़ रहना

1 कुरिन्थियों : सुसमाचार की व्यावहारिकता के द्वारा विभाजनों का समाधाान

2 कुरिन्थियों : सेवकाई का बचाव और सुसमाचार की सेवकाई

रोमियों : संपूर्ण उपदेश और सुसमाचार के कार्य का प्रचार

पौलुस के मध्यम पत्र (परमेश्वर की योजना में कलीसियाओं के एक मन होने को उपयोग किए गए)

इफिसियों : कलीसिया के भेद को समझना और मसीह की योजना को प्रगट करना

फिलिप्पियों : कलीसिया में और सुसमाचार की उन्नति में एक मन होकर रहना

कुलुस्सियों : कलीसिया के सिर (प्रमुख) पर ध्यान लगाना

फिलेमोन : सुसमाचार की उन्नति में एक मन होने की संबन्धात्मक व्यावहारिकता

पौलुस के आखिरी या बाद के पत्र (परमेश्वर के घराने को उचित क्रम में रखने के लिए उपयोग किए गए)

1 तीमुथियुस : परमेश्वर के घराने, उसकी कलीसिया के सामुदायिक जीवन को उचित क्रम में रखना

तीतुस : सही शिक्षा या सिद्धांत में कलीसियायों को स्थिर करने के बाद शेष बचे हुए को क्रम में रखना

2 तीमुथियुस : अगली पीढ़ी के लिए अधिकार की छड़ी को सु-प्रशिक्षित, विश्वासयोग्य अगुवों तक पहुंचाना

पौलुस *'एक बुद्धिमान राजमिस्त्री'* के समान था (1 कुरिन्थियों 3:10)। आप उसके पत्रों को ऐसे भवन खण्ड कह सकते हैं जिन्हें परमेश्वर के परिवार और घराने की नींव के लिए क्रमानुसार डाला गया था। उदाहरण के लिए, आप नीचे देख सकते हैं, पौलुस के प्रथम पत्र या आरम्भिक पत्र शुद्ध सुसमाचार के अनुग्रह में जो कि यीशु मसीह है, आध्यात्मिक शिष्यों को स्थिर करने को लिखे गए थे। यह चित्र संभवत: पौलुस के पत्रों का कालानुक्रमिक और आध्यात्मिक क्रम स्पष्ट करने में सहायक होगा :

पौलुस चूंकि एक बुद्धिमान राजमिस्त्री था, आइये उसके पत्रों पर व्यापार के उपकरणों के रूप में विचार करें, यदि कहा जाए तो जिस तरह से एक निपुण बढ़ई या मैकेनिक को यह जानकारी होना ज़रूरी है कि किस काम के लिए किस उपकरण का उपयोग किया जाना चाहिए, वैसे ही एक शिष्य को यह जानना है कि परमेश्वर के वचन में एक शिष्य को दृढ़ और स्थिर करने के लिए किस उपकरण का उपयोग किया जाता है। नीचे दिये उपकरणों को देखें और पहचानें कि प्रत्येक का उपयोग कैसे किया जाता है :

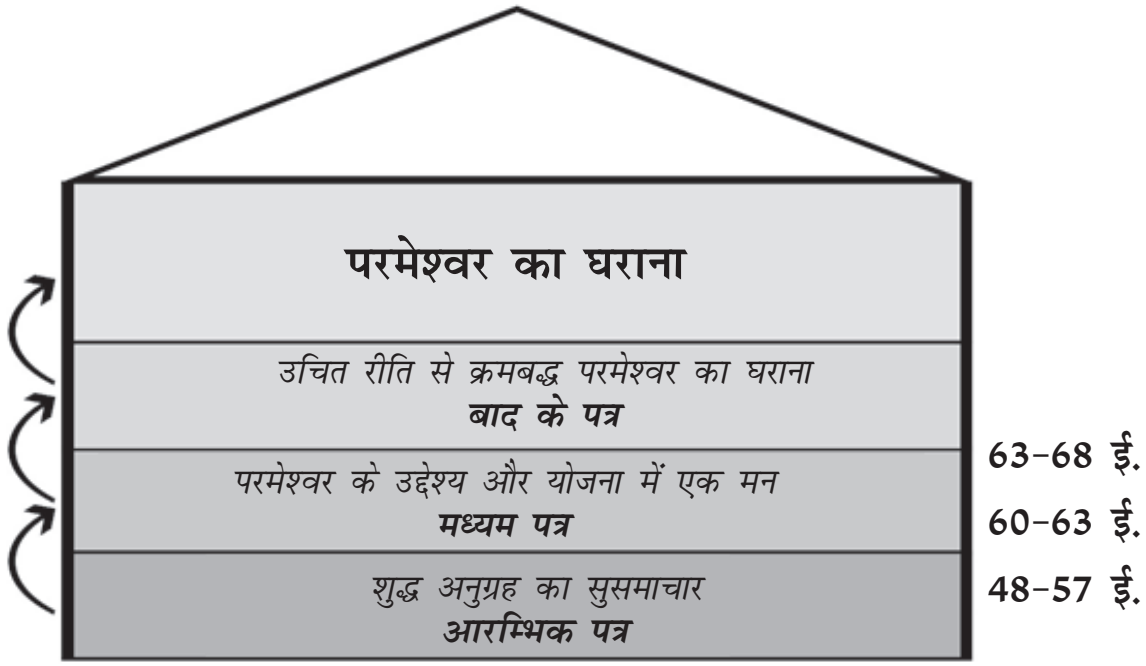

जबकि यह सरल लगता है, तौभी परमेश्वर के वचन की उपकरणों के रूप में उपयोग करने की समझ और योग्यता में कमी पाई जाती है। जिस तरह से बढ़ई और मैकेनिक को अपने काम के उपकरणों की जानकारी होगी है, वैसे ही प्रत्येक शिष्य को यह जानना और सीखना है कि परमेश्वर के वचन का उपयोग कैसे किया जाता है। मसीह का अनुसरण करने में किसी भी समस्या का सामना करने को हमें जिस भी उपकरण की ज़रूरत होती उसे परमेश्वर ने हमें अनुग्रहपूर्वक दे दिया है (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

गलातियों

इफिसियों

11 तीमुथियुस

अब हम इन तीनों वर्गों में से एक पत्र या उपकरण को आपको एक दृढ़ शिष्य बनाने व स्थिर करने में सहायता किए जाने को लेंगे। उदाहरण के लिए पाठ 8 में हम आपको ''शुद्ध अनुग्रह के सुसमाचार'' में स्थिर करने के लिए आरम्भिक पत्रों में से गलातियों का उपयोग करेंगे। इसके बाद पाठ 9 में, हम आपको ''परमेश्वर के उद्देश्य और अनंत योजना में एम मन'' स्थिर करने को मध्यम पत्रों में से इफिसियों का उपयोग करेंगे। अंत में, पाठ 10 में, हम आपको ''उचित रीति से क्रमबद्ध परमेश्वर के घराने'' में स्थिर करने के लिए बाद के पत्रों में से 1 तीमुथियुस का उपयोग करेंगे। हम मसीही विश्वास के सबसे महत्वपूर्ण बुनियादी सिद्धांतों ''शुद्ध अनुग्रह का सुसमाचार'' से आरम्भ करेंगे।

IV. शुद्ध अनुग्रह के सुसमाचार में स्थिर शिष्य

पाठ 8

शुद्ध अनुग्रह का सुसमाचार
आरम्भिक पत्र

(48-57 ई.)

गलातियों पौलुस के प्रथम पत्रों में से एक है जिसे विश्वासियों को अनुग्रह के शुद्ध सुसमाचार में स्थिर करने को लिखा गया था। यह पत्र सिखाता है कि एक शिष्य विश्वास द्वारा अनुग्रह ही से स्वतंत्र होता और धर्मी ठहराया जाता है, कामों से या व्यवस्था का पालन करने से नहीं। यह पत्र बहुत से शिष्यों के बीच पवित्र आत्मा के एक प्रचलित स्थानापन्न के रूप में शरीर को भी प्रकट करता है। **नोट :** हमारी प्रशिक्षण नियमावली, *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की* योजना, पाठ 13, पृष्ठ 98, में **गलातियों पर अध्ययन पाया जाता है।**

अवलोकन और मनन : निम्नलिखित प्रश्नों और शास्त्रवचनों को पढ़ें और अपने उत्तरों से रिक्त स्थानों को भरें। तब आप यह मनन करने और सारांश देने पाएंगे कि आपके विचार से प्रत्येक अध्याय का क्या अर्थ है। अपने अध्ययन के अंत में, आप दूसरों के साथ विचार-विमर्श करें और जो कुछ आपने सीखा है उसे अपने जीवन में लागू करें।

अध्याय 1:1-24 - पौलुस और शुद्ध अनुग्रह का सुसमाचार

1. पौलुस की प्रेरिताई किसकी ओर से नहीं है (1)? .....? यह किसकी ओर से है? .....
2. अनुग्रह और शांति कहां से मिलती है (3)?.....
   पौलुस प्रभु यीशु मसीह के बारे में कैसे बताता है (4)?.....
3. पौलुस क्यों आश्चर्यचकित था (6)?.....
   .....
4. सुसमाचार को बिगाड़ने वालों के साथ आपको कैसा व्यवहार करना चाहिए (8-9)?.....
   ..... पौलुस ने इसे कितनी बार कहा?
5. आप कैसे जानते हैं कि वह परमेश्वर की स्वीकृति को पाना चाहता था (10)?.....
   .....
   पौलुस मनुष्य या परमेश्वर किसकी स्वीकृति की खोज में था?.....
6. पौलुस को सुसमाचार कैसे मिला (11-12)?.....
7. पौलुस किसके लिए अत्यंत उत्साहित था (13-14)?.....
8. पौलुस को कब अलग किया गया था (15-16)?.....
   उसे किसने बुलाया था?.....
   परमेश्वर पौलुस के लिए क्या करने को प्रसन्न था? .....

परमेश्वर ने पौलुस पर अपने पुत्र को क्यों प्रगट किया? .....

9. पौलुस के मन - परिवर्तन पर लोगों का क्या कहना था (23)?.....

.....

10. पौलुस के द्वारा किसे महिमा मिलती थी (24)? क्यों .....

<u>मनन</u> : अनुग्रह का शुद्ध सुसमाचार पौलुस के द्वारा कैसे प्रगट हुआ था? अपने उत्तर को सारांश में दें: .....

.....

.....

.....

<u>अध्याय 2:1-21</u> - अनुग्रह और व्यवस्था

1. पौलुस यरूशलेम क्यों गया था (1-3)? .....

.....

2. झूठे भाई क्या करने को चुपचाप से घुस आए थे (4-5) .....

उन्होंने उनकी जासूसी क्यों की थी? .....

पौलुस क्यों उनके अधीन नहीं हुआ?.....

3. याकूब, कैफा और यूहन्ना ने पौलुस को संगति का दाहिना हाथ क्यों दिया (6-9)? .....

.....

पौलुस किनके पास गया? .....

4. पौलुस ने पतरस का विरोध क्यों किया (11-13)? .....

.....

.....

.....

.....

5. उनके चाल - चलन में क्या गलत था (14)? .....

6. एक दोषी व्यक्ति परमेश्वर के सामने कैसे धर्मी ठहराया जाता है (15-16)? .....

क्या कोई व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहराया जा सकता है? क्यों नहीं? .....

7. यदि आप मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं, तो अब आपमें कौन रहता है (19-21)? .....

आप अभी भी शरीर में अपना जीवन कैसे जी सकते हैं? .....

क्या चीज़ परमेश्वर के अनुग्रह को निष्प्रभावित करेगी? .....

<u>मनन</u> : अनुग्रह के शुद्ध सुसमाचार और व्यवस्था के बीच क्या अंतर है? .....

अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

अध्याय 3:1-29 अनुग्रह और काम

1. गलातियों को आत्मा कैसे मिला था (1-3)? .....
   आत्मा से आरम्भ करके, अब वे किस तरह से सिद्ध होने का प्रयास कर रहे थे? .....
2. परमेश्वर कैसे आत्मा को दान में देता और चमत्कार के काम करता है (5)? .....
3. अब्राहम को कैसे धर्मी गिना गया था (6)? .....
4. कौन अब्राहम के पुत्रों के समान आशीषित है (7-9)? .....
5. यदि आप व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, तो आप किसके अधीन हैं (10)? .....
6. धर्मी कैसे जीवित रहता है (11)? .....
7. कौन आपके लिए शापित बना (13)? .....
8. अब्राहम की आशीष अन्यजातियों तक कैसे पहुंची (14)? .....
   इस आशीष से आप क्या पाते हैं? .....
9. अब्राहम का वंश कौन था (15-19) .....परमेश्वर ने अब्राहम को मीरास कैसे दी . ..... व्यवस्था से या प्रतिज्ञा से? .....यदि प्रतिज्ञा से, तो परमेश्वर ने व्यवस्था क्यों दी?.....
10. जो पाप के बंधन में थे उन्हें प्रतिज्ञा कैसे दी गई (22)? .....
    प्रतिज्ञा किसे दी गई है?.....
11. व्यवस्था को क्यों दिया गया था (24-25)? .....
    अब आप व्यवस्था के संरक्षण के अधीन क्यों नहीं हैं?

मनन : एक दोषी व्यक्ति को परमेश्वर के सामने कैसे दोष मुक्त घोषित किया जाता और धर्मी बनाया जाता है? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....
.....
.....
.....

अध्याय 4:1-31 - अनुग्रह और उद्धार

1. समय के पूरा होने पर, परमेश्वर ने किसे भेजा (4-5)? .....
   क्यों? .....
2. परमेश्वर ने आपके हृदयों में किसे भेजा है (6)? .....
3. (7) इसलिए, अब आप एक ..... नहीं, परंतु ..... हैं और फिर .... भी।
4. पुत्र बनाए जाने से पहले आप क्या थे (8-9)? .....

परमेश्वर के साथ आपका नया संबंध क्या है? .....

5 पौलुस गलातियों में किसे देखना चाहता था (19)? .....

6. अब्राहम के दो पुत्र थे (22-26)। किन स्त्रियों के पुत्र थे? .....और .....
..... प्रत्येक पुत्र का जन्म कैसे हुआ था (23)? .....
.और ये दोनों पुत्र किन दो वाचाओं को प्रस्तुत करते हैं (25-26)? .....
.....और .....

7. 28-30 पदों में दोनों पुत्रों के बीच अंतर और तुलना करें। .....

8. इसलिए, आप ..... की संतान नहीं हैं (31) परंतु ..... स्त्री की संतान है।

मनन : प्रेरित पौलुस ने कैसे प्रमाणित किया कि उद्धार शुद्ध अनुग्रह के सुसमाचार से है न कि व्यवस्था से? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....
.....
.....

अध्याय 5:1-26 - अनुग्रह और पवित्र आत्मा

1. मसीह ने आपको क्यों स्वतंत्र किया है (1)? .....
इसलिए, आपको इस स्वतंत्रता में क्यों दृढ़ खड़े रहना है? .....
.....

2. आप किस कारण अनुग्रह से गिर सकते हो (4)? .....

3. पद 6 के अनुसार केवल कौन सी चीज़ गणना में आती है? .....
.....

4. सत्य के सुसमाचार को मानने से कौन तुम्हें रोक सकता है (7)? .....क्यों .....
.....

5. क्रूस के अपमान या ठोकर को कैसे हराया जा सकता है (11)? .....
.....

6. पूरी व्यवस्था एक बात में कैसे पूरी होती है (14)? .....

7. हम शरीर की लालसाओं को किस तरह से पूरा नहीं कर सकते हैं (16)? .....
.....
आत्मा में चलने का अर्थ क्या है? .....

8. कौन एक दूसरे के विरोधी हैं (17)? .....
वे क्यों विरोधी हैं?.....

9. आप कैसे व्यवस्था के अधीन नहीं हो सकते हैं (18)?.....

10. शरीर के काम कौन से हैं (19-21)?.....
.....
.....
.....

11. आत्मा के फल क्या हैं (22-23)? .....

12. जो मसीह के हैं उनके साथ क्या होता है (24)? .....

13. आत्मा के अनुसार जीवित रहने पर, हमें और क्या करना भी है (25)? .....

<u>मनन</u> : शरीर में चलने और आत्मा में चलने के बीच क्या अंतर हैं? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

<u>अध्याय 6:1-18</u> - अनुग्रह और परमेश्वर की महिमा

1. यदि कोई व्यक्ति किसी अपराध में पकड़ा जाए, तो किसे उसे संभालना है (1)?.....

'आत्मिक' होने का क्या अर्थ है? .....

'आत्मिक' होना महत्वपूर्ण क्यों है? .....

उन्हें कैसे संभालना होगा? .....

परंतु, आपको किसकी चौकसी करनी है? .....क्यों? .....

.....

.....

2. आप स्वयं को कैसे धोखा दे सकते हैं (3)? .....

3. आपको अपने जीवन का क्या करना है (4)? .....

4. यदि आप अपने शरीर के लिए बोएंगे, तो आप क्या काटेंगे (7-9)? .....

.....

5. यदि आप आत्मा के लिए बोएंगे, तो आप क्या काटेंगे? .....

आपको क्यों साहस नहीं छोड़ना है (9)? .....

इसलिए,..... करने में साहस न छोड़ें (9)।

5. लोगों का खतना क्यों किया जाता है (12-13)? .....

6 आप किस एक बात पर ही घमण्ड कर सकते हैं (14)? .....

7. कौन सी एक ही बात महत्व रखती है (15)? ..... आपके विचार से ''नई सृष्टि'' होने का क्या अर्थ है? .....

.....

8. जो इस नियम पर चलेंगे उनका क्या होगा (16)? .....

<u>मनन</u> : अनुग्रह का शुद्ध सुसमाचार कैसे मनुष्य या स्वयं को महिमा न देकर परमेश्वर को महिमा देता है? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

<u>विचार-विमर्श</u> : अनुग्रह के शुद्ध सुसमाचार की तुलना व्यवस्था और कामों से करें। .....

.....

.....

.....

.....

गलातियों में अनुग्रह के सुसमाचार की तुलना अपने जीवन से करें। आपने दूसरों से जिस अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें। .....

.....

.....

.....

अनुग्रह के शुद्ध सुसमाचार में अच्छे ढंग से स्थिर होने को आपको अपने जीवन में किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है?

.....

.....

.....

.....

<u>व्यावहारिकता</u> : आप अपने जीवन में इन परिवर्तनों को कब और कैसे करेंगे? .....

.....

.....

.....

.....

पौलुस के आरम्भिक पत्रों में पाँच पत्र और हैं (1 और 2 थिस्सलुनीकियों, 1 और 2 कुरिन्थियों, और रोमियों)। इन पत्रों का अध्ययन वैकल्पिक है और हमारी प्रशिक्षण नियमावली *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना;* पृष्ठ 100-107 में देखा जा सकता है। .....

V. परमेश्वर की अनंत योजना में स्थिर शिष्य

पाठ 9

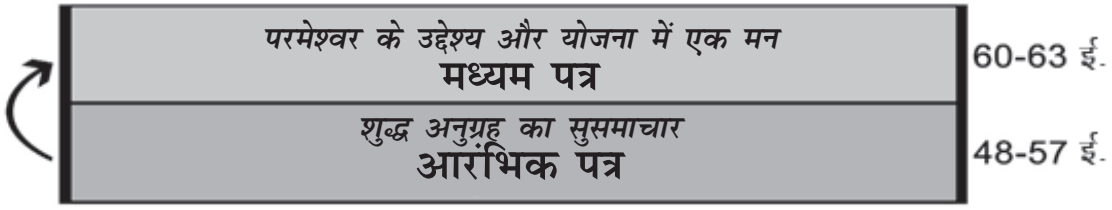

इफिसियों पौलुस का अपने मध्यम पत्रों में से पहला पत्र है, जिसे उसने बंदीगृह से, विश्वासियों के मसीह के व्यक्तित्व और अनंत योजना में स्थिर और एक होने को लिखा जो बीते समय से छिपी हुई थी, परंतु अब प्रगट हुई थी। पौलुस स्पष्ट करता है कि अनुग्रह का सुसमाचार कैसे लोगों, परिवारों और उसकी कलीसिया पर परमेश्वर की महिमामयी योजना को दिखाते हुए प्रभाव डालता है, उस सामर्थ से जो हमारे भीतर कार्य करती है। **नोट : इफिसियों का अध्ययन हमारी प्रशिक्षण नियमावली, *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना,* पाठ 18, पृष्ठ 108, में भी मिलता है।**

अवलोकन और मनन : निम्नलिखित प्रश्नों और शास्त्रवचनों को पढ़ें और अपने उत्तरों से रिक्त स्थानों को भरें। इसके बाद आपके विचार से प्रत्येक अध्याय का जो अर्थ है आप उस पर मनन करेंगे और उसका सारांश देंगे। आपके अध्ययन के अंत में, आपने अब तक जो सीखा है उस पर दूसरों के साथ विचार-विमर्श करेंगे और उसे अपने जीवन में लागू करेंगे।

इफिसियों 1:21-23 - मसीह की योजना में आशीषें और अधिकार

1. किसने आपको मसीह में आशीष दी है (3)? ..... उसने आपको किससे आशीषित किया है?. .....
2. परमेश्वर ने आपको मसीह में कब चुना था (4)? ..... उसने आपको क्यों चुना? .... और .....
3. परमेश्वर ने आपके लिए पहले से क्या ठहराया (5)? ..... उसने आपको लेपालक पुत्र/पुत्री क्यों बनाया (6)? .....
4. मसीह के लहू के द्वारा आपको क्या मिला है (7)? ..... छुटकारे का क्या अर्थ है? ... .
5. मसीह में आपको किस भेद से अवगत कराया गया है (9-10)? ....
6. मसीह में आपने क्या पाया है (11)? .....
7. परमेश्वर ने आपको पहले से क्यों ठहराया (11-12)? .....
8. मसीह में आप पर कौन सी छाप लगी है (13)? ..... पवित्र आत्मा हमें किसका आश्वासन देता है (14)? .....
9. पौलुस ने इफिसियों के विश्वास और प्रेम पर कैसे प्रतिक्रिया दी (16)? .....

10. पौलुस इफिसियों को किस बात से अवगत कराना चाहता था (18-19)? .....

.....

11. परमेश्वर ने अपने पुत्र को कलीसिया में क्या पदवी दी है (22)? .....

.....

कलीसिया क्या है (23)? .....

<u>मनन</u> : मसीह में आपकी आशीषें और अधिकार क्या हैं? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

<u>इफिसियों 2:1-22</u> - मसीह की योजना में आपकी नई पदवी

1. 2:1-21 के अनुसार उद्धार से पहले की अपनी स्थिति के बारे में बताएं : .....

.....

.....

.....

2. अब मसीह में अपनी स्थिति के बारे में बताएं (2:1-21).....

.....

.....

.....

3. आपको किसमें बनाया गया है (2:22)? .....

.....

.....

<u>मनन</u> : मसीह में आपकी व्यक्तिगत और संयुक्त स्थिति क्या है? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

<u>इफिसियों 3:1-21</u> : परमेश्वर की अनंत योजना के लिए प्रार्थना

1. पौलुस को भेद कैसे बताया गया था (3)? .....
2. भेद को अब किन पर प्रगट किया गया है (5)? .....
3. भेद क्या है (6)? .....

.....

4. पौलुस पर परमेश्वर का अनुग्रह क्यों हुआ (8)? ..... और (9) .....

.....

5. परमेश्वर कलीसिया के द्वारा क्या प्रगट करने जा रहा है (10)? .....
6. परमेश्वर का अनंत उद्देश्य किसमें सिद्ध हुआ है (11)? .....
7. मसीह में हमारा क्या है (12)? .....

8. उसकी महिमा के धन के अनुसार पवित्र आत्मा आपको क्या प्रदान करता है (16)? .....
.....कहाँ.....

9. पौलुस आपको क्या समझाना चाहता है (18-19)? .....
.....

पौलुस आपको किससे परिपूर्ण देखना चाहता है? .....

10. परमेश्वर आपमें क्या करने के योग्य है (20)? .....
.. वह ऐसा कैसे करेगा? .....
.....

कलीसिया में किसकी महिमा के लिए (21)? .....

<u>मनन</u> : प्रेरित पौलुस की कलीसिया के लिए क्या प्रार्थना है जो परमेश्वर की अनंत योजना है? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....
.....
.....

<u>इफिसियों 4-6</u> - परमेश्वर की अनंत योजना और उद्देश्य में चलना

एकता में चलना (4:1-16)

1. आपको किस तरह से चलना है (1)? .....
2. आपको किसके साथ चलना है (2)? .....
3. आपको क्या बनाए रखने का यत्न करना है (3)? .....
4. 4-6 के अनुसार, एक, ... एक, ...एक, ...
.....एक, ...एक, ...एक .....
.....और एक है .....
5. कलीसिया को वरदान क्यों दिए गए (12-14)? .....
.....
.....
6. आपको किसमें बढ़ना है (15)? .....
7. पूरी देह या कलीसिया का निर्माण किस पर होना है (16)? .....

शुद्धता में चलना (4:17-32)

8. पुराने मनुष्यत्व के बारे में बताएं (17-22)। .....
.....
.....
9. अब आपको क्या करना है (22-32)? .....
.....
.....
.....

प्रेम में चलना (5:1-16)

10. आपको किसका अनुकरण या नकल करनी है (1)? ..... आपको किसमें चलना है (2)?
.....

11. अपने लिए मसीह के प्रेम के बारे में बताएं (2)। .....
.....

12. बताएं कि अंधकार में रहना कैसा होता है (3-8)। .....
.....

13. अंधकार में चलने वालों पर क्या आता है (6)? .....

ज्योति में चलना (5:7-14)

14. एक समय आप थे (8) ..... परंतु अब आप .....
..... हो। अत: अब आपको कैसे चलना है? .....
.....

15. अंधकार के साथ सहभागी होने के बजाय, आपको क्या करना है (11)? .....
.....

16. किसी वस्तु के ज्योति में प्रगट किए जाने पर क्या होता है (13)?

ध्यानपूर्वक चलना (5:15-17)

17. आपको कैसे नहीं चलना है (15)? .....आपको कैसे चलना है?
.....

18. क्योंकि दिन बुरे हैं, इस कारण आपको अपने समय को कैसे बिताना है (16)? .....
.....

मेल में चलना (5:18-6:9)

19. आपको किससे परिपूर्ण होना है (18)? .....
20. आपको एक दूसरे के अधीन क्यों रहना है (21)? .....
21. पत्नी की भूमिका क्या है (22)? .....
22. पति की भूमिका क्या है (25)? .....
23. एक पति को अपनी पत्नी से कैसे प्रेम करना है (33)? .....
    पत्नी का अपने पति के प्रति कैसा रवैया होना चाहिए?.....
24. बच्चों का अपने माता-पिता के प्रति क्या उत्तरदायित्व है (6:1-4)? .....
.....
    पिताओं को क्या नहीं करना है (4)? .....
    पिताओं को क्या करना है (4)? .....
25. सेवकों या कर्मचारियों की क्या भूमिका है (5)? .....
26. स्वामियों या मालिकों की क्या भूमिका है (9)? .....

विजय में चलना (6:10-24)

27. आपको किसमें बलवंत बनना है (10)? .....

    किसकी शक्ति में? .....

28. आपको परमेश्वर के सारे हथियारों को क्यों धारण करना है (11)? .....

    .....

29. चूंकि आप मांस और लहू से नहीं लड़ते, आप फिर किससे लड़ते हैं (12)? .....

    .....

30. 6 हथियारों के नाम बताएं (13-18)। .....

31. आपको आत्मा में सारा समय क्या करना है (18)? .....

मनन : प्रेरित पौलुस विश्वासियों को आत्मा में चलने का निर्देश कैसे देता है, जो परमेश्वर की अनंत योजना है? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

विचार - विमर्श : परमेश्वर के उद्देश्य और अनंत योजना में इफिसियों का पत्र एकता और एक मनसा के लिए कैसे योगदान देता है? .....

.....

.....

.....

अपने जीवन, परिवार और कलीसिया को परमेश्वर के उद्देश्य और योजना में उचित रीति से स्थिर करने के लिए आपको किन परिवर्तनों को करने की ज़रूरत है? .....

.....

.....

.....

व्यावहारिकता : अपने जीवन, परिवार और कलीसिया में आप कब और कैसे यह परिवर्तन करेंगे? .....

.....

.....

.....

.....

पौलुस के मध्यम पत्रों में तीन और पत्र हैं (फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन)। इन पत्रों का अध्ययन वैकल्पिक है और हमारी प्रशिक्षण नियमावली, *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना*; पृष्ठ 110-115 में देखा जा सकता है।

VI परमेश्वर के घराने में स्थिर शिष्य

पाठ 10

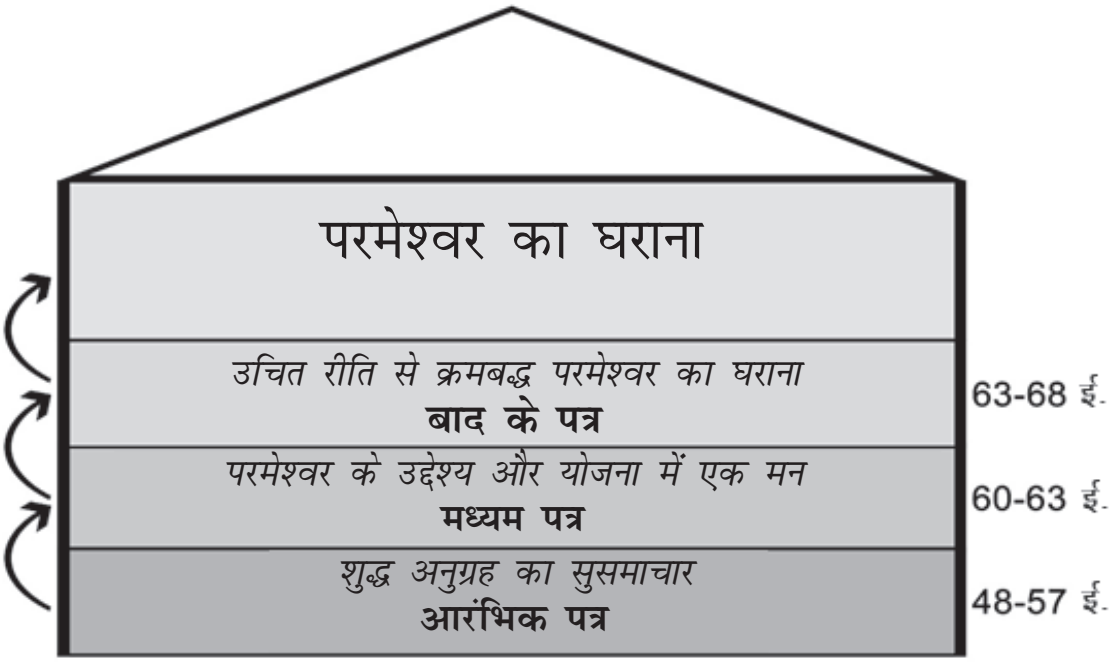

पहला तीमुथियुस, पौलुस के बाद के पत्रों में पहला पत्र है, जिसे परमेश्वर के उचित रीति से क्रमबद्ध घराने में स्थिर करने को लिखा गया था। पौलुस अपने आत्मिक पुत्र तीमुथियुस तक नमूने को पहुंचा रहा था जिसकी ज़रूरत उसे पौलुस के जाने के बाद उसके काम को जारी रखने के लिए होगी। यह नमूना उचित शिक्षा, संतोष सहित भक्ति और योग्य आत्मिक निरीक्षकों को नियुक्त करने का था। **नोट : पहला तीमुथियुस पर अध्ययन हमारी प्रशिक्षण नियमावली *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना*, पाठ 22, पृष्ठ 116, पर भी मिलता है।**

अवलोकन और मनन : निम्नलिखित प्रश्नों और शास्त्रवचनों को पढ़ें और अपने उत्तरों से रिक्त स्थानों को भरें। इसके बाद आपके विचार से प्रत्येक अध्याय का जो अर्थ है उस पर मनन करें व उसका सारांश दें। अपने अध्ययन के अंत में, आपने जो कुछ सीखा है उस पर दूसरों के साथ विचार-विमर्श करें और उसे व्यवहार में लाएं।

1 तीमुथियुस 1:1-20 - परमेश्वर के घराने में सही सिद्धांत और अच्छा विवेक

1. पौलुस के काम का उद्देश्य क्या है (5)? ..... प्रेम किससे उत्पन्न होता है? .....
2. व्यवस्था को किनके लिए ठहराया गया है (9-11)? ....
3. पौलुस को क्या मिला (13)? ..... पौलुस के लिए क्या बहुतायत से हुआ (14)? .....
4. उसका विश्वास और प्रेम कहां से आया (14)? .....

5. पौलुस पर दया क्यों हुई (16)? .....

.....

6. पौलुस ने तीमुथियुस को क्या काम सौंपा था (18-19अ)? .....

.....

मनन : परमेश्वर के घराने को उचित ढंग से क्रमबद्ध करने के लिए सिद्धांत और अच्छा विवेक इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

1 तीमुथियुस 2:1-15 - प्रार्थना और परमेश्वर के घराने में पुरुषों और स्त्रियों का चाल-चलन

1. पौलुस किनके लिए चाहता है कि आप प्रार्थना करें (1-2)? .....क्यों (2-4)? .....

.....

2. परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में ''एक'' मध्यस्थ कौन है (5)? .....

3. पौलुस की इच्छा क्या है (8-11)? .....

. और .....

मनन : कलीसिया में परमेश्वर के घराने के उचित ढंग से काम करने के लिए प्रेरित पौलुस प्रार्थना और पुरुषों और स्त्रियों के चाल-चलन पर क्या निर्देश देता है। अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

1 तीमुथियुस 3:1-16 - परमेश्वर के घराने में अगुवाई का महत्व

1. यदि आप अध्यक्ष बनना चाहते हैं तो आप किसकी इच्छा करते हैं (1)? .....

2. अध्यक्ष की योग्यताएं क्या हैं (2-7)? .....

.....

.....

.....

.....

3. सेवक (डीकन) की योग्यताएं क्या हैं (8-13)? .....

.....

.....

.....

4. पौलुस इन बातों को क्यों लिख रहा था (14-15)? .....

.....

.....

.....

मनन : परमेश्वर के घराने या कलीसिया को उचित रीति से क्रमबद्ध करने के लिए अगुवाई का इतना महत्व क्यों है? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

1 तीमुथियुस 4:1-16 - परमेश्वर के घराने में भक्ति का प्रशिक्षण

1. आत्मा आनेवाले समयों में क्या होने के बारे में बताता है (1-3)? .....

.....

.....

.....

2. परमेश्वर की ओर से प्रत्येक भली वस्तु को कैसे ग्रहण करना है (4)? .....
3. आपको स्वयं को भक्ति के लिए क्यों प्रशिक्षित करना है (7-8)? .....

.....

4. आप यत्न और परिश्रम क्यों करते हैं (10)? .....

.....

5. आपको अन्य विश्वासियों के लिए कैसे उदाहरण बनना है (12-16)? .....

.....

.....

6. आपको किसकी चौकसी रखनी है (16)? .....

मनन : एक शिष्य को भक्ति का प्रशिक्षण कैसे दिया जाता है, और परमेश्वर के उचित रीति से क्रमबद्ध घराने में भक्ति किस तरह की दिखती है? अपने उत्तर को सारांश में दें :.....

.....

.....

.....

1 तीमुथियुस 5:1-25 - परमेश्वर के घराने में पुरुषों, स्त्रियों, विधवाओं व प्राचीनों की भूमिका

1. (1-3) आपको बूढ़े को .....जानकर, जवानों को, ...

.....जानकर, बूढ़ी स्त्रियों को, ...जानकर जुवान स्त्रियों को,.....

..... जानकर समझाना है और विधवाओं का .....

..... करना है।

2. किसी प्राचीन के विरुद्ध दोष लगाए जाने पर आपको कैसे कार्य करना है (19)? .....

.....

3. क्या आप अपने पापों को छिपा सकते हैं (24)? ..... जल्दी ही या बाद में क्या होता है? .....

4. क्या आपके भले काम छिपे रह सकते हैं (25)? .....

मनन : परमेश्वर के उचित रीति से क्रमबद्ध घराने में प्रेरित पौलुस पुरुषों और स्त्रियों, विधवाओं, और प्राचीनों को क्या निर्देश देता है? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

बूढ़े पुरुष .....

बूढ़ी स्त्रियाँ .....

विधवा .....

प्राचीन .....

1 तीमुथियुस 6:1-21 - परमेश्वर के घराने को उचित रीति से क्रमबद्ध करने पर उपदेश

1. (3) आपकी शिक्षा ..... के साथ सहमत और .... के अनुरूप होनी चाहिए।

2. ..... सहित .....में बड़ी कमाई क्या है (6)?

3. संतोष क्यों, (7)? .....

4. आपको किससे संतुष्ट रहना है (8)? .....

5. जो धनी होना चाहते हैं उनका क्या होता है (9)? .....

6. रुपये का लोभ किसकी जड़ है (10)? ..... रुपये के लोभ के कारण कुछ लोगों के साथ क्या होता है? .....

.....

7. परमेश्वर के जन को किससे भागना है (11)? .....परमेश्वर के जन को किसका पीछा करना है (11)? .....

.....

8. उसे किससे लड़ना है (12)? ..... उसे किसे थामें रखना है? .....

.....

9. प्रभु यीशु को, उसके धन्य प्रगटीकरण पर क्या कहा गया है (15)? .....

10. उसके पास क्या है (16)? ..... वह कहां रहता है?

''उसकी .....

11. पौलुस की धनवानों के लिए क्या आज्ञा है (17-19)? .....

.....

.....

<u>मनन</u> : परमेश्वर के घराने को उचित रीति से क्रमबद्ध करने में पौलुस के कुछ अंतिम उपदेश कौन से हैं? अपने उत्तर को सारांश में दें : .....

.....

.....

.....

.....

.....

<u>विचार विमर्श</u> : प्रेरित पौलुस ने 1 तीमुथियुस को लिखा ताकि आप यह जान सकें कि एक व्यक्ति को परमेश्वर के घराने, जीवित परमेश्वर की कलीसिया, में किस तरह से व्यवहार करना चाहिए। ऐसे कौन से सिद्धांत हैं जो आपको अपने जीवन, अपने परिवार और कलीसिया में रहने के ढंग के बारे में बताते हैं? .....

.....

.....

.....

.....

.....

अपने जीवन, परिवार और कलीसिया को परमेश्वर के घराने में उचित रीति से क्रमबद्ध करने के लिए आपको उनमें क्या परिवर्तन करने की ज़रूरत होगी? .....

.....

.....

.....

.....

.....

<u>व्यावहारिकता</u> : आप अपने जीवन, परिवार और कलीसिया में ये परिवर्तन कैसे और कब करेंगे? .....

.....

.....

.....

.....

.....

पौलुस के बाद के पत्रों में दो पत्र और है (तीतुस और 2 तीमुथियुस)। इन पत्रों का अध्ययन वैकल्पिक है, और हमारी प्रशिक्षण नियमावली *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना;* पृष्ठ 181-121, में देखा जा सकता है।

VII. शिष्यों का मसीह में और मसीह के साथ स्थिर होना

पाठ 11

मसीह में आपका जीवन

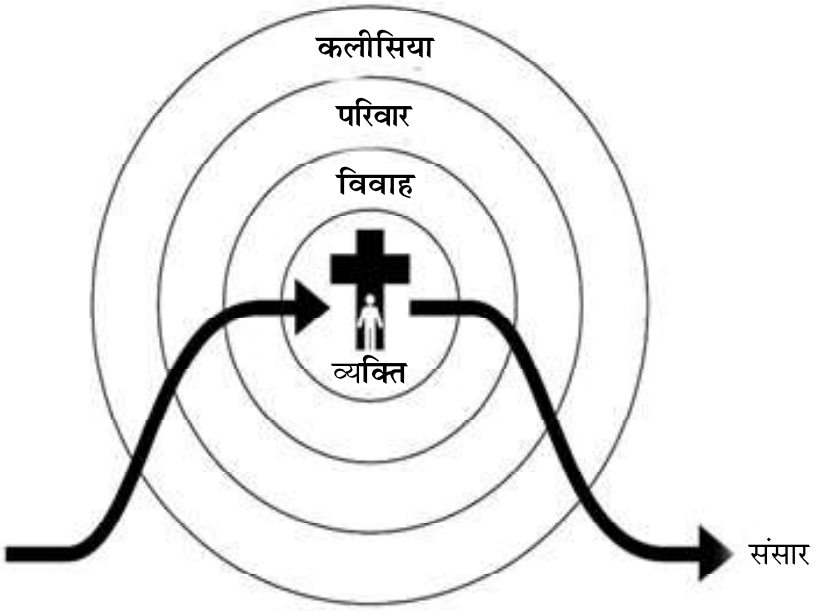

मसीही जीवन में एक विश्वासी के मसीह में अपनी धनी मीरास को जानने से अधिक महत्वपूर्ण व बुनियादी और कुछ भी नहीं है। मसीह में यह धन बढ़ता नहीं है परंतु उद्धार पाने के तत्काल बाद ही वे परिपूर्ण और सिद्ध हो जाते हैं। वे किसी भी तरह से मानवीय योग्यता (कामों) से जुड़े नहीं होते, परंतु परमेश्वर के पुत्र की योग्यता पर निर्भर होते हैं। उन्हें केवल ईश्वरीय प्रकाशन से जाना जाता और अधिकांशत: अपनी कमज़ोरी और दु:ख में अनुभव किया जाता है।

<u>अवलोकन और मनन</u> : निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और रिक्त स्थानों को भरते हुए उत्तर दें :

1. इफिसियों 3:8 में, पौलुस मसीह में आपके धन के बारे में कैसे बताता है? .....

2. 2 कुरिन्थियों 6:10 में, हम शोक करनेवाले हैं, तौभी..... कंगाल हैं, तौभी..... ..... ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं, तौभी .....

3. कुलुस्सियों 1:27 में, उसकी महिमा का धन और आशा तुम मेंक्या है? .....

4. कुलुस्सियों 2:2 में पौलुस लौदीकिया वासियों के क्या पाने की आशा करता है? ....

5. कुलुस्सियों 2:3 के अनुसार, मसीह में क्या छिपा है? ....

6. गलातियों 2:16 में एक व्यक्ति को मसीह में कैसे धर्मी ठहराया जाता है? ..... क्या किसी को व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहराया जा सकता है? .....मसीह में धर्मी ठहराए जाने से आप क्या समझते हैं? .
.....
.....

7. गलातियों 2:19-20 के अनुसार, आप किसके लिए मर गए हैं? ..... आप व्यवस्था के लिए क्यों मर गए हैं?..... अब आप में कौन रहता है? .....

8. गलातियों 3:14 के अनुसार, मसीह में आपको कौन सी आशीष मिली है? .....

9. गलातियों 3:26 के अनुसार, आप सभी विश्वास के द्वारा ..... की .... हो।

10. 1 कुरिन्थियों 1:2 में, उस कलीसिया के नाम जो मसीह में ..... किए गए।

11. 1 कुरिन्थियों 1:30 में, हमारे मसीह में होने के कारण, वह हमारे लिए क्या है? .....
.....

12. 1 कुरिन्थियों 15:22 के अनुसार, आप आदम में मरे पर मसीह में ..... किए गए।

13. 2 कुरिन्थियों 2:14 के अनुसार, परमेश्वर कैसे सदा उनकी जो मसीह में हैं अगुवाई करता है? .....
.....

14. रोमियों 3:24 के अनुसार, एक शिष्य परमेश्वर के अनुग्रह से उस..... के द्वारा जो मसीह यीशु में है धर्मी ठहराया जाता है। छुटकारे का क्या अर्थ है (इफिसियों 1:7)? .....
.....

15. रोमियों 5:17 बताता है कि मृत्यु ने आदम के द्वारा राज्य किया, परंतु मसीह के द्वारा अनंत जीवन में राज्य करने के लिए . ..... और ..... वरदान पाया जाता हैं।

16. रोमियों 6:3 में जो मसीह में हैं उन्होंने किसका बपतिस्मा लिया? .....

17. रोमियों 6:4 में, शिष्य मसीह की मृत्यु का बपतिस्मा लेने के द्वारा उसके साथ ..... जाते हैं। क्यों? .....
.....

18. रोमियों 6:5 के अनुसार, शिष्य मसीह के साथ मृत्यु और ..... में एक हो गए हैं।

19. रोमियों 6:11 के अनुसार, शिष्य पाप के लिए मर जाता और ..... के लिए मसीह में जीवित हो जाता है।

20. रोमियों 6:23 के अनुसार, शिष्य का मसीह में किस तरह का जीवन होता है? .....

21. रोमियों 8:1 के अनुसार, जो शिष्य मसीह में हैं, उन पर ..... की आज्ञा नहीं।

22. रोमियों 8:37-39 के अनुसार, हमारे प्रभु यीशु मसीह में जो शिष्य हैं वे ..... से भी बढ़कर हैं और कुछ भी उन्हें परमेश्वर के प्रेम से..... नहीं कर सकता।

23. रोमियों 16:10 के अनुसार, अपिल्लेस को स्वीकृति कहाँ से मिली थी? .....

24. इफिसियों को लिखे पौलुस के पत्र में, वह कई तरह के धन की सूची देता है जो आपका मसीह यीशु में है। देखते हैं कि आप निम्नलिखित पदों में से इस तरह के कुछ धन को उठा पाते हैं कि नहीं : 1:3 ....., 1:4 ....., 1:5 ..... और .....1:7 ..... और .....1:11....., 1:13....., 1:19....., 2:5....., 2:6..... और .....2:7....., 2:10....., 2:13....., 2:14....., 2:16....., 2:18....., 2:19....., और ....., 2:22....., 3:6....., 3:19....., 5:2.....

25. कुलुस्सियों 2:9-10 के अनुसार, मसीह का आपमें वास करने का क्या अर्थ है? .....
.....

26. 2 थिस्सलुनीकियों 2:16 के अनुसार, हमारे प्रभु यीशु मसीह और हमारे परमेश्वर पिता ने हमें क्या दिया है? .....
.....और .....

27. 2 तीमुथियुस 2:1 के अनुसार, शिष्य, उस अनुग्रह से जो मसीह में है .... होता है।

28. 2 तीमुथियुस 2:10 के अनुसार, चुना हुआ व्यक्ति मसीह में, क्या पाता है? .....

29. इब्रानियों 10:14 में, मसीह के एक ही चढ़ावे ने आपके लिए क्या किया है? .....

30. फिलिप्पियों 4:19 में, मसीह यीशु में परमेश्वर ने उनके लिए क्या प्रतिज्ञा की जो मसीह यीशु में हैं? .....
.....किसके अनुसार? .....

<u>विचार-विमर्श</u> : अन्य शिष्यों के साथ आपने जो सीखा है उसमें अंतर करें और उसकी तुलना करें और दूसरों से आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें। .....
.....
.....
.....

मसीह के आपमें वास करने के संबंध में आपको अपने जीवन में क्या परिवर्तन लाने की ज़रूरत है? .....
.....
.....
.....

<u>व्यावहारिकता</u> : आप अपने जीवन में इन परिवर्तनों को कब और कैसे करेंगे? .....
.....
.....
.....
.....

पाठ 12

मसीह के साथ आपका जीवन

एक विश्वासी का सबसे बड़ा विशेषाधिकार जीवित परमेश्वर की उपस्थिति में व्यक्तिगत रीति से चलना है। आपके आत्मिक जीवन और मसीह के साथ चलने के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताना महत्वपूर्ण और अनिवार्य है। प्रभु के साथ एकांत में समय बिताने पर, आप उसके संपर्क में होते हैं, जिसका सबसे अधिक महत्व है। सबसे महत्वपूर्ण काम जो हम कर सकते हैं, कुछ ऐसा जिसे हम सभी कर सकते हैं; वह वचन और प्रार्थना में मसीह के साथ समय बिताना है।

अवलोकन और मनन : निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें और उत्तर देते हुए रिक्त स्थानों को भरें :

1. उत्पत्ति 3:8-9 के अनुसार, परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के बाद आदम और हत्वा ने क्या किया? ....परमेश्वर ने क्या किया? ..... यदि परमेश्वर सर्वज्ञानी है, तो उसने आदम और हव्वा से क्यों पूछा, ''तू कहाँ है?'' .....
2. इब्रानियों 11:5 के अनुसार, हनोक ने परमेश्वर को प्रसन्न किया। उत्पत्ति 5:24 के अनुसार आपके विचार से हनोक ने परमेश्वर को कैसे प्रसन्न किया था? .....
3. 2 कुरिन्थियों 5:7 के अनुसार, हमें ..... को देखकर नहीं, ...से चलना है।
4. गलतियों 5:16 के अनुसार, हमें किसके साथ चलना है? .....
5. कुलुस्सियों 2:6 के अनुसार, हमें किसमें चलना है? .....
6. रोमियों 6:4 के अनुसार, हमें किस तरह के जीवन में चलना है? .....
7. इफिसियों 5:2 के अनुसार, हमें किसमें चलना है? .....
8. हम सभी के समान, याकूब के जीवन में सफलताएं और असफलताएं थीं। तौभी, उत्पत्ति 48:15 में, वह अपने पिछले जीवन की ओर देखकर कह पाया ''परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा .... बना है।''
9. यहोशू 1:8 के अनुसार, आपको कितनी बार परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाना चाहिए? .... और ..... क्यों?.....
10. 1 इतिहास 23:30 के अनुसार, प्रत्येक प्रात: और संध्या आपको क्या करना चाहिए? प्रभु का .... और .....
11. भजन संहिता 5:3 के अनुसार परमेश्वर को दाऊद की वाणी कब सुनाई देती थी? .....

12. भजन संहिता 16:11 के अनुसार दाऊद ने परमेश्वर की उपस्थिति में क्या अनुभव किया था? .....

13. यिर्मयाह 15:16 के अनुसार, परमेश्वर के वचन मिलने पर उसने क्या किया था?.....
आपके विचार से 'मैंने खा लिया' का क्या अर्थ है?.....
ये वचन यिर्मयाह के लिए क्या बन गए थे? 'मेरे मन के .....
.....और.....।'

14. मत्ती 4:4 के अनुसार क्या एक विश्वासी केवल रोटी से ही जीवित रह सकता है? .....

15. मत्ती 6:6 के अनुसार, शिष्य को कहाँ प्रार्थना करनी चाहिए? .....

16. मत्ती 6:11 के अनुसार आपको जीवन की रोटी को कितनी बार खाना है? .....

17. मत्ती 6:33 के अनुसार एक शिष्य को जीवन में सबसे पहले किसकी खोज करनी है? और .....
..... आपको क्या मिल जाएगा? .....

18. मरकुस 1:35 के अनुसार, यीशु ने अपने पिता के साथ कब समय बिताया? .....
उसने अपने पिता के साथ कहाँ समय बिताया? ..... उसने क्या किया? .....

19. प्रेरितों के काम 1:14 के अनुसार आरम्भिक कलीसिया एक चित्त होकर ..... करने को समर्पित थी।

20. इफिसियों 1:16 में पौलुस उनके लिए सदा क्या करना याद रखता था?.....

21. इफिसियों 3:19 में, पौलुस ने उनके किससे भरे जाने के लिए प्रार्थना की थी?.....

22. इफिसियों 6:18 में, हमें कब प्रार्थना करनी चाहिए? ..... उसने किसमें प्रार्थना की? .....
.....

23. फिलिप्पियों 1:4 में, पौलुस ने किसके साथ प्रार्थना की? ..... क्यों (5)?.....
.....

24. कुलुस्सियों 4:2-3 में, हमें ..... के साथ उसमें ..... रहते हुए .....
..... में लगे रहना है। पौलुस ने प्रार्थना करने की विनती क्यों की (3)? ....

25. 1 थिस्सलुनीकियों 5:17 और रोमियों 1:9-10 में, निरंतर प्रार्थना करने का क्या अर्थ है? .....

26. मरकुस 3:14 के अनुसार, यीशु ने बारह शिष्यों को क्यों नियुक्त किया था? ''कि वे उसके .....
.....रहें और वह उन्हें भेजे कि वे ..... करें।''

27. लूका 10:41 के अनुसार, मार्था बहुत सी बातों के कारण व्याकुल और परेशान थी। ''एक आवश्यक बात'' कौन सी थी, जिसे मार्था ने अनदेखा किया था (39)? .....
(42) मरियम ने उस भाग को चुन लिया था जो उससे ..... न जाएगा।

28. लूका 15:4 के अनुसार आप यह कैसे जान पाते हैं कि यीशु आपके साथ संबंध में रहना चाहता है?.....
..... 15:8 ..... और .....15:20-32 .....
.....

29. यूहन्ना 6:35 में यीशु कहता है, ''जीवन की ..... मैं हूँ।'' ''जो मेरे पास आता है वह कभी .
..... न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी .....
..... न होगा।''

30. यूहन्ना 15:4-10 में कितनी बार ''रहने'' या ''वास करने'' शब्दों का प्रयोग किया गया है? .....
आपके विचार से मसीह में बने रहने का क्या अर्थ है, जो सच्ची दाखलता है? .....
.....

31. यूहन्ना 21:15-17 के अनुसार, यीशु ने पतरस से कितनी बार पूछा कि क्या वह उससे प्रेम करता है? .....
.....

यदि आप उसकी भेड़ों को चराने और उनका ध्यान रखने जा रहे हैं तो आपके विचार से इसके लिए यीशु से प्रेम करना महत्वपूर्ण क्यों है? .....

32. प्रेरितों के काम 4:13 में, उन्होंने पतरस और यूहन्ना के बारे में क्या जाना? .....

33. प्रेरितों के काम 20:28 में, अध्यक्षों को सावधानीपूर्वक किसकी चौकसी करनी है? .....

34. 2 कुरिन्थियों 4:16 के अनुसार, बाहरी मनुष्यत्व के नष्ट होते जाने पर भी आप हिम्मत क्यों नहीं हारते? .....
..... हमारा भीतरी मनुष्यत्व कब नया बनता है? .....

35. 1 तीमुथियुस 4:16 के अनुसार, आप कौन और किस पर कड़ी चौकसी रखेंगे? .....
और यदि आप इस में बने रहे तो किसको बचायेंगे? .....

36. इब्रानियों 5:11-14 के अनुसार, किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन कीजिए जिसे ठोस आहार की नहीं दूध की आवश्यकता है?
.....

ठोस भोजन किसके लिए है? .....
आप अच्छे और बुरे के बीच कैसे अंतर कर सकते हैं? .....

37. 1 यूहन्ना 1:3-4 के अनुसार, आपकी किसके साथ सहभागिता है? .....
और .....यूहन्ना ने ये बातें क्यों लिखीं? .....
.....

38. प्रकाशितवाक्य 3:20 के अनुसार, आपके हृदय के द्वार पर कौन दस्तक दे रहा है? .....
..... यदि आप उसके लिए अपना हृदय खोलेंगे तो वह क्या करेगा? .....
.....

<u>विचार-विमर्श:</u> अन्य शिष्यों से आपने जो सीखा है, उसमें अंतर करें और दूसरों से आपने जिस भी अतिरिक्त सिद्धांत को सीखा है उसे लिखें। .....
.....
.....

मसीह के साथ चलने के संबंध में आपको अपने जीवन में क्या परिवर्तन करने की ज़रूरत है? .....
.....
.....

<u>व्यावहारिकता</u>: आप अपने जीवन में इन परिवर्तनों को कब और कैसे करेंगे? .....
.....
.....
.....

पाठ 13

प्रभु के साथ दैनिक शांत समय

यह मसीह के साथ आपके जीवन का एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। कई वर्ष पहले, मैं हेनरी ब्लैकाबाय के साथ था जिसने ''एक्सपीरियंसिंग गॉड'' को लिखा था और मैंने उससे पूछा कि मसीह के साथ उसका संबंध इतना नवीन व सुचारू कैसे बना रहा था। उसने मुझे बताया कि वर्षों पहले जब वह 17 वर्ष का था, उसने यह फैसला किया था कि यदि उसे मसीह के साथ समय बिताना है, तो इसके लिए उसे प्रतिदिन प्रात: परमेश्वर के वचन से उसके साथ समय बिताना होगा। प्रभु के साथ प्रतिदिन समय बिताना केवल एक सराहनीय कार्य ही नहीं, यह मसीह के साथ एक बहुतायत के, संपूर्ण और आनंददायी जीवन को अनुभव करने के लिए अनिवार्य भी है। यिर्मयाह 15:16 पर ध्यान दें, परमेश्वर के वचन मिलने पर उसने क्या किया? .... वे उसके लिए क्या बन गए? ''उसके मन के ..... और ..... का कारण। भोजन खाने के समान, हम इसे चखते हैं **(अवलोकन)**, चबाते हैं **(मनन)** और निगलते हैं .... **(व्यावहारिकता)**। आइये अब परमेश्वर के वचन से संक्षिप्त परिभाषा दें कि उसके वचन और प्रार्थना में समय बिताने का क्या अर्थ है; हम संगति के इस समय को ''शांत समय'' कहेंगे।

1. ''शांत समय'' **क्या** है?

   निर्गमन 16:15 के अनुसार, स्वर्ग से गिरने वाला मन्ना क्या था? .....

   स्वर्ग से उतरने वाली सच्ची जीवन की रोटी कौन है (यूहन्ना 6:35)? ..... यदि आप यीशु, जीवन की रोटी, के पास आएं, तो आप ..... नहीं होंगे और न ही कभी ..... होंगे।

2. आपको ''शांत समय'' **क्यों** बिताना चाहिए? .....

   मत्ती 4:4 के अनुसार, आत्मिक रूप से जीने के लिए आपको किसकी ज़रूरत है .....

   आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए, 1 पतरस 2:2 के अनुसार आपको किसकी ज़रूरत है? .....

3. आपको **कब** ''शांत समय'' बिताना चाहिए? .....

   निर्गमन 16:21 के अनुसार, उन्हें मन्ना कब मिलता था? .....

   मत्ती 6:11 के अनुसार कितनी बार यीशु ने कहा कि हमें रोटी की ज़रूरत है? .....

   मरकुस 1:35 के अनुसार, यीशु ने अपने पिता के साथ कब समय बिताया? .....

4. आपको **कहाँ** ''शांत समय'' बिताना चाहिए? .....

   मत्ती 6:6 के अनुसार, यीशु ने किस स्थान को प्रार्थना करने का उत्तम स्थान कहा? .....

   मरकुस 1:35 के अनुसार यीशु अपने पिता के साथ कहाँ समय बिताता था? .....

5. आप ''शांत समय'' कैसे बिताते हैं? पृष्ठ 49-59 पर शांत समय सहायता को देखें। .....

पाठ 14

प्रार्थना और आराधना के लिए व्यावहारिक सहायता

शांत समय का आरंभ करने और मसीह के साथ सुचारू रूप से चलने और रहने में आपकी सहायता करने के लिए, मैं आपको मसीह के साथ प्रतिदिन उसके वचन में यात्रा करने या दैनिक विवरण बनाने की सलाह दूंगा। यह आवश्यक है कि आप न केवल उसके वचन में अपने समय में वृद्धि करें, परंतु अपने शांत समय और अपने जीवन दोनों में ही अपने प्रार्थना जीवन को बढ़ाएं। बाइबल में प्रार्थना बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें 650 प्रार्थनाओं और उन प्रार्थनाओं के 450 उत्तरों का विवरण मिलता है। नये नियम में यीशु के 25 बार प्रार्थना करने और पौलुस के 41 बार प्रार्थना किये जाने का विवरण मिलता है। इनमें से अधिकांश प्रार्थनाओं का वर्णन या हवाला *अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना* में मिलता है : पृष्ठ 15,2., पृष्ठ 21,12., पृष्ठ 25-27., पृष्ठ 41-42, 1-10., पृष्ठ 44, 31., पृष्ठ 46, 1-3., पृष्ठ 54-56, पृष्ठ 57-58, पृष्ठ 55-56. ये कुछ व्यावहारिक तरीके हैं जो सभी समयों में आत्मा में प्रार्थना करने का आरंभ किए जाने में आपकी सहायता कर सकते हैं। निम्नलिखित प्रार्थना और आराधना के चार बाइबल आधारित पहलूओं में आपका मार्गदर्शन करने में आपकी सहायता करेगा।

प्रशंसा (प्रकाशितवाक्य 5:12-13) परमेश्वर की सामर्थ, प्रताप और महिमा पर विचार करना।

अंगीकार (1 यूहन्ना 1:8-10) परमेश्वर के साथ इस पर सहमत होना कि हमारे पाप क्षमा किए व धोए गए हैं।

शुक्रगुज़ारी (भजन संहिता 95:2-3) आपसे जुड़ी सभी बातों में परमेश्वर की इच्छा को ग्रहण करना

याचना (फिलिप्पियों 4:6) परमेश्वर को अपनी विनतियों और निवेदनों के बारे में बताना।

यह याचनाओं या निवेदनों की सूची है जो आपके प्रार्थना जीवन में अधिक प्रभावी बनने में आपकी सहायता करेगी। मैं आपको निम्नलिखित दैनिक प्रार्थना मार्गदर्शिका का परामर्श दूंगा या आप स्वयं इसे अपने लिए बना सकते हैं।

1. व्यक्तिगत .....
.....
2. परिवार .....
.....
3. कलीसिया परिवार .....
.....
4. मिशन .....
.....
5. काम या स्कूल .....
.....
6. जो अधिकार या ऊँचे स्थानों पर हैं .....
.....
7. जो भी मैं करता या कहता हूं उस सब में परमेश्वर को महिमा व आदर मिले .....
.....

यदि आप एक नए शिष्य हैं या आपकी परमेश्वर के साथ कभी सुचारु और अर्थपूर्ण दैनिक भेंट नहीं हुई, मैं आपकी एक दिन में 5 मिनट के साथ, 30 दिन की बाइबल अध्ययन सारणी के साथ आरंभ करने में सहायता करना चाहता हूँ। यह दैनिक पठन सारणी परमेश्वर के **नामों** और **गुणों** से आपकी यह जानने और समझने में सहायता करेगी कि वह कौन है और वह आपके लिए क्या हो सकता है। यह आपके स्वर्गीय पिता और आपके व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के साथ जीवन भर की आपकी दैनिक यात्रा का आरंभ करने में सहायक होगा। इस 30 दिन की योजना के बाद, पृष्ठ 72 पर **यीशु के साथ 31 दिन की मुलाकात** दी गई है जो प्रभु के साथ आपके संबंध को बढ़ाएगा। हमने 74-80 पृष्ठों पर कई संपूर्ण बाइबल लेख भी दिए हैं जहाँ पर आप अपनी स्वयं की कार्य-पद्धति या सारणी को बना सकते हैं। याद रखें, हम सभी भिन्न और अलग हैं, इसलिए कृपया उसका ही चुनाव करे जो आपसे मेल खाता है और इससे भी अधिक, इतना अधिक न काटें कि आप चबा या हज़म न कर सकें।

दिन 1 - ***''यहोवा''*** निर्गमन 3:13-15 और यूहन्ना 8:58-59 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें।

स्वतंत्र, स्वयं में संपूर्ण, मैं जो हूँ सो हूँ, यहोवा परमेश्वर का नाम!

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस नाम का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....
.....
.....

दिन 2 - ***''यहोवा कादेश''*** लैव्यव्यवस्था 20:7-8 और 2 कुरिन्थियों 5:21 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें।

इस नाम का अर्थ है वह परमेश्वर जो शुद्ध करता है। परमेश्वर जो सभी बुराइयों से अलग है।

व्यावहारिकता : इस नाम का आपके व्यक्तिगत जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....
.....
.....

दिन 3 - ***''असीमित''*** रोमियों 11:33 और कुलुस्सियों 1:16 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर को मापा नहीं जा सकता। उसे आकार या संख्या या सीमाओं से बताया नहीं जा सकता।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है?

दिन 4 - ***''सर्वशक्तिमान''*** यिर्मयाह 32:17-18 और यूहन्ना 1:3 को पढ़ें व उस पर ध्यान करें।

परमेश्वर सर्वसामर्थी है। उसके कहने से सभी चीज़ें बनीं और उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....
.....
.....
.....
.....
.....

<u>दिन 5</u> – ***''भला''*** भजन संहिता 119:65–72 और यूहन्ना 10:11 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर सिद्ध भलाई का साकार रूप है। वह समस्त सृष्टि के प्रति भली इच्छा से भरपूर है।

<u>व्यावहारिकता</u> : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? ....

....

....

<u>दिन 6</u> – ***''प्रेम''*** 1 यूहन्ना 4:7–10 और रोमियों 8:35 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि हमें व्यक्तिगत रूप व घनिष्ठता से ग्रहण करने को उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया।

<u>व्यावहारिकता</u> : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है?

<u>दिन 7</u> – ***''यहोवा यिरे''*** या उत्पत्ति 22:9–14 और लूका 9:12–17 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर का नाम जो हमेशा अपने लोगों की हरेक ज़रूरत को पूरा करता और करता रहेगा।

<u>व्यावहारिकता</u> : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस नाम का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? ....

....

....

<u>दिन 8</u> – ***''यहोवा शालोम''*** न्यायियों 6:16–24 और इफिसियों 2:14 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

शांति के परमेश्वर का नाम जो हमें संभालता और समझ से कहीं अधिक बढ़कर काम करता है।

<u>व्यावहारिकता</u> : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस नाम का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? ....

....

....

<u>दिन 9</u> – ***''अपरिवर्तनीय''*** भजन संहिता 102:25–28 और इब्रानियों 13:8 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर जो है और जो सदा से रहा है, जो है और हमेशा रहेगा – सिद्ध और अटल।

<u>व्यावहारिकता</u> : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? ....

....

....

<u>दिन 10</u> – ***''सर्वोत्तम''*** भजन संहिता 113:4–5 और कुलुस्सियों 1:16–18 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर प्रणाली में सर्वोच्च ही नहीं परंतु वह समस्त सृष्टि से परे और ऊपर है।

<u>व्यावहारिकता</u> : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? ....

....

....

दिन 11 - ***''न्यायी''*** भजन संहिता 75:1-7 और रोमियों 3:26 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर धर्मी और पवित्र और निष्कपट और सभी बातों में न्यायसंगत है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 12 - ***''पवित्र''*** प्रकाशितवाक्य 4:8-11 और इब्रानियों 4:15 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर की पवित्रता सर्वोत्तम का एक श्रेष्ठ रूप ही नहीं है, परंतु वह पूरी तरह से निष्कलंक है।

व्यावहारिकता : आपके जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 13 - ***''यहोवा राफा''*** निर्गमन 15:22-26 और यशायाह 61:1 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

यहोवा चंगा करता है। परमेश्वर ही मनुष्य की निराशा का उपचार कर सकता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 14 - ***''पर्याप्त''*** प्रेरितों के काम 17:24-28 और कुलुस्सियों 2:9-10 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर की सभी वस्तुएं देने के लिए हैं, और वह आपको आपकी ज़रूरत की प्रत्येक वस्तु को देता है; नि:स्संदेह उसे किसी भी वस्तु की जरूरत नहीं है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 15 - ***''सर्वज्ञानी''*** भजन संहिता 139:1-6 और यूहन्ना 21:17 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर सर्वज्ञानी है। अभी की और आगे होने वाली किसी भी बात पर उसका ज्ञान बढ़कर है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 16 - ***''सर्वव्यापी''*** भजन संहिता 139:7-12 यूहन्ना 3:13 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर हरेक स्थान पर है, हरेक वस्तु में और उसके इर्द-गिर्द है। वह आकाश और पृथ्वी पर है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 17 - ***''करुणामयी''*** व्यवस्थाविवरण 4:29-31 और मत्ती 14:13-14 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर की करुणामयी दया असीम और अटूट है। वह सभी लोगों से उसके पास आने की इच्छा करता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है ? .....

.....

.....

दिन 18 - ***''महाराजा''*** इतिहास 29:11-13 और प्रकाशितवाक्य 19:16 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

प्रत्येक घटना चाहे छोटी हो बड़ी, परमेश्वर उसका अध्यक्ष है। सारी सृष्टि पर उसका नियंत्रण है और वह उस पर राज्य करता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 19 - ***''यहोवा निस्सी''*** निर्गमन 17:8-16 और 1 इतिहास 15:57 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर हमारी ध्वजा है जो विजयी भाव से हमारी अगुवाई करता और मसीह यीशु में हमें विजय देता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 20 - ***''बुद्धिमान''*** नीतिवचन 3:19-20 और 1 कुरिन्थियों 1:30 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें परमेश्वर हमेशा अपनी असीम समझ के साथ काम करता और सभी बातों को हमारी भलाई और अपनी महिमा के लिए पूरा करता है।

व्यावहारिकता - आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 21 - ***''विश्वासयोग्य''*** भजन संहिता 89:1-8 और प्रकाशितवाक्य 3:14 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें।

अपनी विश्वासयोग्यता के साथ-साथ, परमेश्वर अपनी वाचाओं को आदर देता और अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 22 - ***''क्रोध''*** नहूम 1:2-8 और मत्ती 21:12-13 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

मानवीय क्रोध से अलग, परमेश्वर का कोप कभी भी व्यक्तिगत या अति संवेदनशील नहीं होता; यह हमेशा सही होता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 23 – ***''अनुग्रह से भरपूर''*** इफिसियों 1:5-8 और 2 कुरिन्थियों 12:9 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

अनुग्रह परमेश्वर की भली कृपा है जो उसे हमें अनुपयुक्त भलाई और कृपा देने को आगे बढ़ाती है। **व्यावहारिकता :** आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है?

दिन 24 – ***''हमारा सांत्वनादाता''*** 2 कुरिन्थियों 1:3-7 और मत्ती 11:28-30 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

यीशु ने पवित्र आत्मा को ''सांत्वनादाता'' कहा। प्रभु को सारी सांत्वना का परमेश्वर कहा जाता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है ? .....

.....

.....

दिन 25 – ***''अल शद्दाई''*** उत्पत्ति 49:22-26 और यशायाह 9:6 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, परमेश्वर जो पर्याप्त और भरपूर, और सारी आशीषों का स्रोत है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस नाम का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है?

दिन 26 – ***''पिता''*** रोमियों 8:15-17 और मत्ती 6:9 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया, ''हमारे पिता'' आत्मा ने हमें ''अब्बा'' (घनिष्ठ पिता) पुकारना सिखाया।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है ? .....

.....

.....

दिन 27 – ***''कलीसिया का सिर''*** इफिसियों 1:22-23 और कुलुस्सियों 1:18 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

मसीह कलीसिया का सिर है जो देखता, सुनता, सोचता और सभी बातों को निर्धारित करता है।

इस कारण, कलीसिया को अगुवाई और निर्देशन के लिए किसकी ओर देखना चाहिए? .....

.....

.....

दिन 28 – ***''हमारा मध्यस्थ''*** इब्रानियों 4:14-16 और 1 तीमुथियुस 2:5 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर का पुत्र हमारे लिए मध्यस्थता करता है। वह पिता परमेश्वर से मांगने या बात करने को हमारे लिए द्वार खोलता है।

व्यावहारिकता : आपके व्यक्तिगत जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....

.....

.....

दिन 29 - ***''अदोनाय''*** 2 शमूएल 7:18-22 और फिलिप्पियों 2:7-11 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें परमेश्वर अपने लोगों और अपने सेवकों का स्वामी या प्रभु है।

व्यावहारिकता : आपके जीवन पर इस गुण का क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....
.....
.....

दिन 30 - ***''इलोहीम''*** उत्पत्ति 17:7-8 और प्रकाशितवाक्य 1:8 को पढ़ें और उस पर ध्यान करें

परमेश्वर सामर्थी और शक्तिशाली है, अपनी सर्वोच्च प्रभुता को दिखा रहा है।

व्यावहारिकता : इस नाम का आपके व्यक्तिगत जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है या आपमें क्या परिवर्तन आया है? .....
.....
.....

प्रभु के साथ आपके दिन प्रतिदिन के जीवन में अतिरिक्त सहायता

सबसे पहले, पलटकर पाठ 6 और पाठ 7 (पृष्ठ 28-31) की समीक्षा करें, **''इस पर निर्देश कि बाइबल का अध्ययन कैसे करें।''** अपने दैनिक शांत समय को बढ़ाने में सहायता करने को (पाठ 13, पृष्ठ 63), एक पंक्तिवाली कार्य - पुस्तिका लें और अपनी यात्रा का जीवन की रोटी के साथ विवरण रखने को पृष्ठों को 3 चरण के नाम दें। नीचे दिये उदाहरण को देखें। याद रखें कि चूंकि यह वचन में आपका व्यक्तिगत शांत समय है इसलिए इसमें पाठ 6 और पाठ 7 के लिए विचार - विमर्श को शामिल नहीं करना है। शांत समय पर अपने विचारों को दूसरों को बताने पर विचार-विमर्श बाद में किया जा सकता है। आपकी आरम्भ करने में सहायता करने को भजन संहिता 23:1 लें, ठीक वैसे ही जैसे आपने पाठ 6 में मत्ती 6:33 में (पृष्ठ 28-29) और पाठ 7 में मरकुस 1:35 (पृष्ठ 31-32) में किया था। आप चरण 1 **ध्यान करना** और चरण 2 **मनन करना** के संदर्भ में भजन संहिता 23:1-9 को पढ़ना चाहेंगे। इसके बाद चरण 3 **व्यावहारिकता** को पूरा करें। नीचे हमने जितनी पंक्तियाँ दी हैं आपको अपनी कार्य-पुस्तिका में संभवत: इससे अधिक पंक्तियों की ज़रूरत होगी। प्रार्थना करना याद रखें। किसी ने वर्षों पहले मुझे बताया था कि प्रभु का फोन न. यिर्मयाह 33:3 है।

1. **अवलोकन - ''इसे देखें'' - यह क्या कहता है? (जानकारी)** .....
.....
..... (यह यह केवल एक मार्गदर्शिका है, अत: अधिक स्थान के लिए कार्यपुस्तिका का उपयोग करें)।

2. **मनन - ''इस पर विचार करें'' - इसका क्या अर्थ है ? (स्पष्टीकरण)**

.....
.....(यह केवल एक मार्गदर्शिका है, अत: अधिक स्थान के लिए कार्यपुस्तिका का उपयोग करें)

3. **व्यावहारिकता - ''इसे जीयो - इसे करो'' - अब क्या ? (रूपांतरण)** यह केवल एक मार्गदर्शिका है, अत: अधिक स्थान के लिए कार्यपुस्तिका का उपयोग करें, ...
.....

जीवित वचन के साथ आपकी यात्रा का आरम्भ करने में सहायता किए जाने को, मैं **''यीशु के साथ 31 दिनों की मुलाकात''** की सलाह देना चाहूंगा। आप प्रत्येक विषय वस्तु और शास्त्रवचन को लेकर उपरोक्त उच्चारण की विधि का उपयोग कर सकते हैं। **''यीशु के साथ 31 दिनों की मुलाकात''** के बाद, आप पूरी बाइबल को (देखें पृष्ठ 72-73) या फिर कोई भी बाइबल पुस्तकों या पत्रों को आत्मा की अगुवाई के अनुसार पढ़ना आरम्भ कर सकते हैं।

यीशु के साथ 31 दिनों की मुलाकात

दिन	विषय	शास्त्रवचन
दिन 1	यीशु के बारे में पहले से बताया गया	यशायाह 53
दिन 2	यीशु का जन्म	मत्ती 1:18-25
दिन 3	यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मार्ग तैयार करता है	मत्ती 3:1-4:11
दिन 4	यीशु की सामरी स्त्री से भेंट	यूहन्ना 4:1-26
दिन 5	यीशु का घर में ठुकराया जाना	लूका 4:14-30
दिन 6	यीशु अपने शिष्यों को बुलाता है	लूका 5:1-11
दिन 7	मैदान पर संदेश	लूका 6:17-46
दिन 8	विधवा का पुत्र और पापी स्त्री	लूका 7:11-17; 7:36-50
दिन 9	यीशु का फरीसियों से सामना	मत्ती 12:1-13; 22-45
दिन 10	बीज बोने वाले का दृष्टांत	मत्ती 13:1-43
दिन 11	यीशु का तूफान को शांत करना	लूका 8:22-25
दिन 12	यीशु का एक पुरुष, स्त्री और लड़की को चंगा करना	मरकुस 5:1-43
दिन 13	यीशु का 5000 को खिलाना	यूहन्ना 6:1-14
दिन 14	पतरस का यीशु को जानना	लूका 9:18-27
दिन 15	विश्वास से चंगाई	मरकुस 9:14-32
दिन 16	अधिक शिक्षाएं और दृष्टांत	मत्ती 17:24-18:20
दिन 17	अधिक शिक्षाएं और दृष्टांत	मत्ती 18:21-19:15
दिन 18	धनवान युवा अधिकारी	मरकुस 10:17-31
दिन 19	शिष्यों का भेजा जाना	लूका 10:1-24
दिन 20	महान आज्ञा	मरकुस 12:28-44
दिन 21	भले सामरी का दृष्टांत	लूका 10:25-37
दिन 22	प्रभु की प्रार्थना	लूका 11:1-13
दिन 23	यीशु का लाजर को मृतकों में से जिलाना	यूहन्ना 11:1-44
दिन 24	यरूशलेम में विजयी प्रवेश	मत्ती 21:1-27
दिन 25	प्रभु भोज	यूहन्ना 23:1-17
दिन 26	शिष्यों के लिए यीशु का प्रेम	यूहन्ना 14-15
दिन 27	यीशु की गिरफ्तारी और विश्वासघात	मत्ती 26:36-75
दिन 28	यीशु की अनुचित जांच	यूहन्ना 18:19, 19:16
दिन 29	यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और मृत्यु	यूहन्ना 19:17-42
दिन 30	यीशु का पुनरुत्थान और दिखाई देना	यूहन्ना 20-21
दिन 31	यीशु की महान आज्ञा	मत्ती 28:16-20

अब परमेश्वर के वचन, पवित्र आत्मा की भूमिका, शुद्ध अनुग्रह के सुसमाचार, परमेश्वर का उद्देश्य और अनंत योजना और परमेश्वर के घराने या परिवार में परमेश्वर की व्यवस्था में आपको एक ठोस नींव मिल गई है। मैं पूरी बाइबल पढ़ने की सलाह दूंगा। अगले तीन पृष्ठों पर बाइबल पठन सारणी को दिया गया है जिसे संपूर्ण बाइबल को 365 दिनों में पढ़ने के लिए बांटा गया है; यदि आपके लिए इतने अधिक पठन को समझना कठिन है, तो आप सारणी को उसके अनुसार संगठित कर सकते हैं जो आपके लिए अच्छा है। मैंने यह पाया है कि मैं एक वर्ष में नया नियम और अगले वर्ष में पुराने नियम को पढ़ सकता हूँ। आप निम्नलिखित बाइबल पठन सारणी को लेकर इसे एक, दो, तीन, चार या पाँच वर्षीय योजना बना सकते हैं। सावधानी की बात : केवल जानकारी पाने को न पढ़ें। एक निर्धारित शांत समय रखें जो परमेश्वर के साथ आपके संबंध को गहरा करने के साथ-साथ आपके जीवन को रूपांतरित करे। 57-59 पृष्ठों पर बाइबल पठन सारणी को दिया गया है।

याद रखें, परमेश्वर का वचन जो आप पढ़ते हैं, सत्य है। सत्य एक व्यक्ति, यीशु मसीह, परमेश्वर का जीवित वचन है और सारे शास्त्रवचन मसीह की ओर संकेत करते हैं। ध्यान दें कि यह आपका व्यक्तिगत शांत समय है, अतः इस विशिष्ट समय में आप दूसरों के साथ कोई चर्चा नहीं करेंगे। बाद में आप दूसरों को उस बारे में बताना चाहेंगे जो आपने वचन के मांस को चबाने के द्वारा सीखा है।

बाइबल पठन सारणी

तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें	तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें
जन. 1	उत्प. 1-2, मत्ती 1		फर. 1	निर्ग. 27-28, मत्ती 21:23-46	
जन. 2	उत्प. 3-5, मत्ती 2		फर. 2	निर्ग. 29-30, मत्ती 22:1-22	
जन. 3	उत्प. 6-8, मत्ती 3		फर. 3	निर्ग. 31-33, मत्ती 22:23-46	
जन. 4	उत्प. 9-11, मत्ती 4		फर. 4	निर्ग. 34-36, मत्ती 23:1-22	
जन. 5	उत्प. 12-14, मत्ती 5:1-26		फर. 5	निर्ग. 37-38, मत्ती 23:23-39	
जन. 6	उत्प. 15-17, मत्ती 5:27-48		फर. 6	निर्ग. 39-40, मत्ती 24:1-22	
जन. 7	उत्प. 18-19, मत्ती 6		फर. 7	लैव्य. 1-3 मत्ती 24:23-51	
जन. 8	उत्प. 20-22, मत्ती 7		फर. 8	लैव्य. 4-6, मत्ती 25:1-30	
जन. 9	उत्प. 23-24, मत्ती 8		फर. 9	लैव्य. 7-9, मत्ती 25:31-46	
जन. 10	उत्प. 25-26, मत्ती 9:1-17		फर. 10	लैव्य. 10-12, मत्ती 26:1-19	
जन. 11	उत्प. 27-28, मत्ती 9:18-38		फर. 11	लैव्य. 13, मत्ती 26:20-54	
जन. 12	उत्प. 29-30, मत्ती 10:1-23		फर. 12	लैव्य. 14, मत्ती 26:55-75	
जन. 13	उत्प. 31-32, मत्ती 10:24-42		फर. 13	लैव्य. 15-17, मत्ती 27:1-31	
जन. 14	उत्प. 33-35, मत्ती 11		फर. 14	लैव्य. 18-19, मत्ती 27:32-66	
जन. 15	उत्प. 36-37, मत्ती 12:1-21		फर. 15	लैव्य. 20-21, मत्ती 28:1-20	
जन. 16	उत्प. 38-40, मत्ती 12:22-50		फर. 16	लैव्य. 22-23, मरकुस 1:1-22	
जन. 17	उत्प. 41, मत्ती 13:1-32		फर. 17	लैव्य. 24-25, मरकुस 1:23-45	
जन. 18	उत्प. 42-43, मत्ती 13:33-58		फर. 18	लैव्य. 26-27, मरकुस 2	
जन. 19	उत्प. 44-45, मत्ती 14:1-21		फर. 19	गिन. 1-2, मरकुस 13:1-21	
जन. 20	उत्प. 46-48, मत्ती 14:22-36		फर. 20	गिन. 3-4, मरकुस 3:22-35	
जन. 21	उत्प. 49-50, मत्ती 15:1-20		फर. 21	गिन. 5-6, मरकुस 4:1-20	
जन. 22	निर्ग. 1-3, मत्ती 15:21-39		फर. 22	गिन. 7, मरकुस 4:21-41	
जन. 23	निर्ग. 4-6, मत्ती 16		फर. 23	गिन. 8-10, मरकुस 5:1-20	
जन. 24	निर्ग. 7-8, मत्ती 17		फर. 24	गिन. 11-13, मरकुस 5:21-43	
जन. 25	निर्ग. 9-10, मत्ती 18:1-20		फर. 25	गिन. 14-15, मरकुस 6:1-32	
जन. 26	निर्ग. 11-12, मत्ती 18:21-35		फर. 26	गिन. 16-17, मरकुस 6:33-56	
जन. 27	निर्ग. 13-15, मत्ती 19:1-15		फर. 27	गिन. 18-20, मरकुस 7:1-13	
जन. 28	निर्ग. 16-18, मत्ती 19:16-30		फर. 28	गिन. 21-23, मरकुस 7:14-8:10	
जन. 29	निर्ग. 19-21, मत्ती 20:1-16				
जन. 30	निर्ग. 22-24, मत्ती 20:17-34				
जन. 31	निर्ग. 25-26, मत्ती 21:1-22				

बाइबल पठन सारणी - जारी

तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें	तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें
मार्च 1	गिन. 24-27, मरकुस 8:11-38		अप्रैल 1	न्यायि. 6-7, लूका 8:1-21	
मार्च 2	गिन. 28-29, मरकुस 9:1-29		अप्रैल 2	न्यायि. 8:9, लूका 8:22-56	
मार्च 3	गिन. 30-31, मरकुस 9:30-50		अप्रैल 3	न्यायि. 10-11, लूका 9:1-36	
मार्च 4	गिन. 32-33, मरकुस 10:1-31		अप्रैल 4	न्यायि. 12-14, लूका 9:37-62	
मार्च 5	गिन. 34-36, मरकुस 10:32-52		अप्रैल 5	न्यायि. 15-17, लूका 10:1-24	
मार्च 6	व्यवस्था. 1-2, मरकुस 11:1-19		अप्रैल 6	न्यायि. 18-19, लूका 10:25-42	
मार्च 7	व्यवस्था. 3-4, मरकुस 11:20-33		अप्रैल 7	न्यायि. 20-21, लूका 11:1-28	
मार्च 8	व्यवस्था. 5-7, मरकुस 12:1-27		अप्रैल 8	रूत 1-4, लूका 11:29-54	
मार्च 9	व्यवस्था. 8-10, मरकुस 12:28-44		अप्रैल 9	1 शमू. 1-3, लूका 12:1-34	
मार्च 10	व्यवस्था. 11-13, मरकुस 13:1-13		अप्रैल 10	1 शमू. 4-6, लूका 12:35-59	
मार्च 11	व्यवस्था. 14-16, मरकुस 13:14-37		अप्रैल 11	1 शमू. 7-9, लूका 13:1-21	
मार्च 12	व्यवस्था. 17-19, मरकुस 14:1-25		अप्रैल 12	1 शमू. 10-12, लूका 13:22-35	
मार्च 13	व्यवस्था. 20-22, मरकुस 14:26-50		अप्रैल 13	1 शमू. 13-14, लूका 14:12-24	
मार्च 14	व्यवस्था. 23-25, मरकुस 14:51-72		अप्रैल 14	1 शमू. 15-16, लूका 14:25-35	
मार्च 15	व्यवस्था. 26-27, मरकुस 15:1-26		अप्रैल 15	1 शमू. 17-18, लूका 15:1-10	
मार्च 16	व्यवस्था. 28, मरकुस 15:27-47		अप्रैल 16	1 शमू. 19-21, लूका 15:11-32	
मार्च 17	व्यवस्था. 29-30, मरकुस 16		अप्रैल 17	1 शमू. 22-24, लूका 16:1-18	
मार्च 18	व्यवस्था. 31-32, लूका 1:1-23		अप्रैल 18	1 शमू. 25-26, लूका 16:19-31	
मार्च 19	व्यवस्था. 33-34, लूका 1:24-56		अप्रैल 19	1 शमू. 27-29, लूका 17:1-19	
मार्च 20	यहो. 1-3, लूका 1:57-80		अप्रैल 20	1 शमू. 30-31, लूका 17:20-37	
मार्च 21	यहो. 4-6, लूका 2:1-24		अप्रैल 21	2 शमू. 1-3, लूका 18:1-17	
मार्च 22	यहो. 7-8, लूका 2:25-52		अप्रैल 22	2 शमू. 4.6, लूका 18:18-43	
मार्च 23	यहो. 9-10, लूका 3		अप्रैल 23	2 शमू. 7-9, लूका 19:1-28	
मार्च 24	यहो. 11-13, लूका 4:1-32		अप्रैल 24	2 शमू. 10-12, लूका 19:29-48	
मार्च 25	यहो. 14-15, लूका 4:33-44		अप्रैल 25	2 शमू. 13-14, लूका 20:1-26	
मार्च 26	यहो. 16-18, लूका 5:1-16		अप्रैल 26	2 शमू. 15-16, लूका 20:27-47	
मार्च 27	यहो. 19-20, लूका 5:17-39		अप्रैल 27	2 शमू. 17-18, लूका 21:1-19	
मार्च 28	यहो. 21-22, लूका 6:1-26		अप्रैल 28	2 शमू. 19-20, लूका 21:20-38	
मार्च 29	यहो. 23-24, लूका 6:27-49		अप्रैल 29	2 शमू. 21-22, लूका 22:1-30	
मार्च 30	न्यायि. 1-2, लूका 7:1-30		अप्रैल 30	2 शमू. 23-24, लूका 22:31-53	
मार्च 31	न्यायि. 3-5, लूका 7:31-50				

बाइबल पठन सारणी - जारी

तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें	तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें
मई 1	1 राजा 1-2, लूका 22:54-71		जून 1	2 इति. 4-6, यूहन्ना 12:20-50	
मई 2	1 राजा 3-5, लूका 23:1-26		जून 2	2 इति. 7-9, यूहन्ना 13:1ध17	
मई 3	1 राजा 6-7, लूका 23:27-38		जून 3	2 इति. 10-12, यूहन्ना 13:18-38	
मई 4	1 राजा 8-9, लूका 23:39-56		जून 4	2 इति. 13-16, यूहन्ना 14	
मई 5	1 राजा 10-11, लूका 24:1-35		जून 5	2 इति. 17-19, यूहन्ना 15	
मई 6	1 राजा 12-13, लूका 24:36-53		जून 6	2 इति. 20-22, यूहन्ना 16:1-15	
मई 7	1 राजा 14-15, यूहन्ना 1:1-28		जून 7	2 इति. 23-25, यूहन्ना 16:16-33	
मई 8	1 राजा 16-18, यूहन्ना 1:29-51		जून 8	2 इति. 26-28, यूहन्ना 17	
मई 9	1 राजा 19-20, यूहन्ना 2		जून 9	2 इति. 29-31, यूहन्ना 18:1-23	
मई 10	1 राजा 21-22, यूहन्ना 3:1-21		जून 10	2 इति. 32-33, यूहन्ना 18:24-40	
मई 11	2 राजा 1-3, यूहन्ना 3:22-36		जून 11	2 इति. 34-36, यूहन्ना 19:1-22	
मई 12	2 राजा 4-5, यूहन्ना 4:1-30		जून 12	एज्रा 1-2, यूहन्ना 19:23-42	
मई 13	2 राजा 6-8, यूहन्ना 4:31-54		जून 13	एज्रा 3-5, यूहन्ना 20	
मई 14	2 राजा 9-11, यूहन्ना 5:1-24		जून 14	एज्रा 6-8, यूहन्ना 21	
मई 15	2 राजा 12-14, यूहन्ना 5:25-47		जून 15	एज्रा 9-10, प्रेरित. 1	
मई 16	2 राजा 15-17, यूहन्ना 6:1-21		जून 16	नहे. 1-3, प्रेरित. 2:1-13	
मई 17	2 राजा 18-19, यूहन्ना 6:22-44		जून 17	नहे. 4-6, प्रेरित. 2:14-47	
मई 18	2 राजा 20-22, यूहन्ना 6:45-71		जून 18	नहे. 7-8, प्रेरित. 3	
मई 19	2 राजा 23-25, यूहन्ना 7:1-31		जून 19	नहे. 9-11, प्रेरित. 4:1-22	
मई 20	1 इति. 1-2, यूहन्ना 7:32-53		जून 20	नहे. 12-13, प्रेरित. 4:23-37	
मई 21	1 इति. 3-5, यूहन्ना 8:1-20		जून 21	एस्तेर 1-3, प्रेरित. 5:1.16	
मई 22	1 इति. 6-7, यूहन्ना 8:21-36		जून 22	एस्तेर 4-6, प्रेरित. 5:17-42	
मई 23	1 इति. 8-10, यूहन्ना 8:37-59		जून 23	एस्तेर 7-10, प्रेरित. 6	
मई 24	1 इति. 11-13, यूहन्ना 9:1-23		जून 24	अय्यूब 1-3, प्रेरित. 7:1-19	
मई 25	1 इति. 14-16, यूहन्ना 9:24-41		जून 25	अय्यूब 4-6, प्रेरित. 7:20-43	
मई 26	1 इति. 17-19, यूहन्ना 10:1-21		जून 26	अय्यूब 7-9, प्रेरित. 7:44-60	
मई 27	1 इति. 20-22, यूहन्ना 10:22-42		जून 27	अय्यूब 10-12, प्रेरित. 8:1-25	
मई 28	1 इति. 23-25, यूहन्ना 11:1-17		जून 28	अय्यूब 13-15, प्रेरित. 8:26-40	
मई 29	1 इति. 26-27, यूहन्ना 11:18-46		जून 29	अय्यूब 16-18, प्रेरित. 9:1-22	
मई 30	1 इति. 28-29, यूहन्ना 11:47-57		जून 30	अय्यूब 19-20, प्रेरित. 9:23-43	
मई 31	2 इति. 1-3, यूहन्ना 12:1-19				

बाइबल पठन सारणी - जारी

तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें	तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें
जुलाई 1	अय्यूब 21-22, प्रेरित. 10:1-23		अगस्त 1	भजन. 65-67, रोमि. 2	
जुलाई 2	अय्यूब 23-25, प्रेरित. 10:24-48		अगस्त 2	भजन. 68-69, रोमि. 3	
जुलाई 3	अय्यूब 26-28, प्रेरित. 11		अगस्त 3	भजन. 70-72, रोमि. 4	
जुलाई 4	अय्यूब 29-30, प्रेरित. 12		अगस्त 4	भजन. 73-74, रोमि. 5	
जुलाई 5	अय्यूब 31-32, प्रेरित. 13:1-23		अगस्त 5	भजन. 75-77, रोमि. 6	
जुलाई 6	अय्यूब 33-34, प्रेरित. 13:24-52		अगस्त 6	भजन. 78, रोमि. 7	
जुलाई 7	अय्यूब 35-37, प्रेरित. 14		अगस्त 7	भजन. 79-81, रोमि. 8:1-18	
जुलाई 8	अय्यूब 38-39, प्रेरित. 15:1-21		अगस्त 8	भजन. 82-84, रोमि. 8:19-39	
जुलाई 9	अय्यूब 40-42, प्रेरित. 15:22-41		अगस्त 9	भजन. 85-87, रोमि. 9	
जुलाई 10	भजन. 1-3, प्रेरित. 16:1-15		अगस्त 10	भजन. 88-89, रोमि. 10	
जुलाई 11	भजन. 4-6, प्रेरित. 16:16-40		अगस्त 11	भजन. 90-92, रोमि. 11:1-21	
जुलाई 12	भजन. 7-9, प्रेरित. 17:1.15		अगस्त 12	भजन. 93-95, रोमि. 11:22-36	
जुलाई 13	भजन. 10-12, प्रेरित. 17:16-34		अगस्त 13	भजन. 96-98, रोमि. 12	
जुलाई 14	भजन. 13-16, प्रेरित. 18		अगस्त 14	भजन. 99-102, रोमि. 13	
जुलाई 15	भजन. 17-18, प्रेरित. 19:1-20		अगस्त 15	भजन. 103-104, रोमि. 14	
जुलाई 16	भजन. 19-21, प्रेरित. 19:21-41		अगस्त 16	भजन. 105-106, रोमि. 15:1-20	
जुलाई 17	भजन. 22-24, प्रेरित. 20:1-16		अगस्त 17	भजन. 107-108, रोमि. 15:21-33	
जुलाई 18	भजन. 25-27, प्रेरित. 20:17-38		अगस्त 18	भजन. 109-111, रोमि. 16	
जुलाई 19	भजन. 28-30, प्रेरित. 21:1-14		अगस्त 19	भजन. 112-115, 1 कुरि. 1	
जुलाई 20	भजन. 31-33, प्रेरित. 21:15-40		अगस्त 20	भजन. 116-118, 1 कुरि. 2	
जुलाई 21	भजन. 34-35, प्रेरित. 22		अगस्त 21	भजन. 119:1-48, 1 कुरि. 3	
जुलाई 22	भजन. 36-37, प्रेरित. 23:1-11		अगस्त 22	भजन. 119:49-104, 1 कुरि. 4	
जुलाई 23	भजन. 38-40, प्रेरित. 23:12-35		अगस्त 23	भजन. 119:105-176, 1 कुरि. 5	
जुलाई 24	भजन. 41-43, प्रेरित. 24		अगस्त 24	भजन. 120-123, 1 कुरि. 6	
जुलाई 25	भजन. 44-46, प्रेरित. 25		अगस्त 25	भजन. 124-127, 1 कुरि. 7:1-24	
जुलाई 26	भजन. 47-49, प्रेरित. 26		अगस्त 26	भजन. 128-131, 1 कुरि. 7:25-40	
जुलाई 27	भजन. 50-52, प्रेरित. 27:1-25		अगस्त 27	भजन. 132-135, 1 कुरि. 8	
जुलाई 28	भजन. 53-55, प्रेरित. 27:26-44		अगस्त 28	भजन. 136-138, 1 कुरि. 9	
जुलाई 29	भजन. 56-58, प्रेरित. 28:1-15		अगस्त 29	भजन. 139-141, 1 कुरि. 10:1-13	
जुलाई 30	भजन. 59-61, प्रेरित. 28:16-31		अगस्त 30	भजन. 142.144, 1 कुरि. 10:14-33	
जुलाई 31	भजन. 62-64, रोमि. 1		अगस्त 31	भजन. 145-147, 1 कुरि. 11:1-15	

बाइबल पठन सारणी - जारी

तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें	तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें
सितम्बर 1	भजन. 148-150, 1 कुरि. 11:16-34		अक्टूबर 1	यशा. 22-23, इफि.3	
सितम्बर 2	नीति. 1-2, 1 कुरि. 12		अक्टूबर 2	यशा. 24-26, इफि. 4	
सितम्बर 3	नीति. 3-4, 1 कुरि. 13		अक्टूबर 3	यशा. 27-28, इफि. 5	
सितंबर 4	नीति. 5-6, 1 कुरि. 14:1.20		अक्टूबर 4	यशा. 29.30, इफि. 6	
सितम्बर 5	नीति. 7-8, 1 कुरि. 14:21-40		अक्टूबर 5	यशा. 31-33, फिलि. 1	
सितम्बर 6	नीति. 9-10, 1 कुरि. 15:1-32		अक्टूबर 6	यशा. 34-36, फिलि. 2	
सितम्बर 7	नीति. 11-12, 1 कुरि. 15:33-58		अक्टूबर 7	यशा. 37-38, फिलि. 3	
सितम्बर 8	नीति. 13-14, 1 कुरि. 16		अक्टूबर 8	यशा. 39-40, फिलि 4	
सितम्बर 9	नीति. 15-16, 2 कुरि. 1		अक्टूबर 9	यशा. 41-42, कुलु. 1	
सितम्बर 10	नीति. 17-18, 2 कुरि. 2		अक्टूबर 10	यशा. 43-44, कुलु. 2	
सितम्बर 11	नीति. 19-20, 2 कुरि. 3		अक्टूबर 11	यशा. 45-47, कुलु. 3	
सितम्बर 12	नीति. 21-22, 2 कुरि. 4		अक्टूबर 12	यशा. 48-49, कुलु. 4	
सितम्बर 13	नीति. 23-24, 2 कुरि. 5		अक्टूबर 13	यशा. 50-52, 1 थिस्स. 1	
सितम्बर 14	नीति. 25-27, 2 कुरि. 6		अक्टूबर 14	यशा. 53-55, 1 थिस्स. 2	
सितम्बर 15	नीति. 28-29, 2 कुरि. 7		अक्टूबर 15	यशा. 56-58, 1 थिस्स. 3	
सितम्बर 16	नीति. 30-31, 2 कुरि. 8		अक्टूबर 16	यशा. 59-61, 1 थिस्स. 4	
सितम्बर 17	सभो. 1-3, 2 कुरि. 9		अक्टूबर 17	यशा. 62-64, 1 थिस्स. 5	
सितम्बर 18	सभो. 4-6, 2 कुरि. 10		अक्टूबर 18	यशा. 65-66, 2 थिस्स. 1	
सितम्बर 19	सभो. 7-9, 2 कुरि. 11:1-15		अक्टूबर 19	यिर्म. 1-2, 2 थिस्स. 2	
सितम्बर 20	सभो. 10-12, 2 कुरि. 11:16-33		अक्टूबर 20	यिर्म. 3-4, 2 थिस्स. 3	
सितम्बर 21	सभो. 1-3, 2 कुरि. 12		अक्टूबर 21	यिर्म. 5-6, 1 तीमु. 1	
सितम्बर 22	श्रेष्ठ. 4-5, 2 कुरि. 13		अक्टूबर 22	यिर्म. 7-8, 1 तीमु. 2	
सितम्बर 23	श्रेष्ठ. 6-8, गला. 1		अक्टूबर 23	यिर्म. 9-10, 1 तीमु. 3	
सितम्बर 24	यशा. 13, गला. 2		अक्टूबर 24	यिर्म. 11-13, 1 तीमु. 4	
सितंबर 25	यशा. 4-6, गला. 3		अक्टूबर 25	यिर्म. 14-16, 1 तीमु. 5	
सितम्बर 26	यशा. 7-9, गला. 4		अक्टूबर 26	यिर्म. 17-19, 1 तीमु. 6	
सितम्बर 27	यशा. 10-12, गला. 5		अक्टूबर 27	यिर्म. 20-22, 2 तीमु. 1	
सितम्बर 28	यशा. 13-15, गला. 6		अक्टूबर 28	यिर्म. 23-24, 2 तीमु. 2	
सितम्बर 29	यशा. 16-18, इफि. 1		अक्टूबर 29	यिर्म. 25-26, 2 तीमु. 3	
सितम्बर 30	यशा. 19-21, इफि. 2		अक्टूबर 30	यिर्म. 27-28, 2 तीमु. 4	
			अक्टूबर 31	यिर्म. 29-30, तीतुस 1	

बाइबल पठन सारणी - जारी

तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें	तिथि	शास्त्रवचन	पढ़ें
नवम्बर 1	यिर्म. 31-32, तीतुस 2		दिसंबर 1	यहेज. 45-46, 2 पत. 3	
नवम्बर 2	यिर्म. 33-35, तीतुस 3		दिसंबर 2	यहेज. 47-48, 1 यूहन्ना 1	
नवंबर 3	यिर्म. 36-37, फिले. 1		दिसंबर 3	दानि. 1-2, 1 यूहन्ना 2	
नवंबर 4	यिर्म. 38-39, इब्रा. 1		दिसंबर 4	दानि. 3-4, 1 यूहन्ना 3	
नवंबर 5	यिर्म. 40-42, इब्रा. 2		दिसंबर 5	दानि. 5-6, 1 यूहन्ना 4	
नवंबर 6	यिर्म. 43-45, इब्रा. 3		दिसंबर 6	दानि. 7-8, 1 यूहन्ना 5	
नवम्बर 7	यिर्म. 46-48, इब्रा. 4		दिसंबर 7	दानि. 9-10, 2 यूहन्ना 1	
नवंबर 8	यिर्म. 49-50, इब्रा. 5		दिसंबर 8	दानि. 11-12, 3 यूहन्ना 1	
नवम्बर 9	यिर्म. 51-52, इब्रा. 6		दिसंबर 9	होशे 1-4, यहूदा 1	
नवंबर 10	विलाप. 1-2, इब्रा. 7		दिसंबर 10	होशे 5-8, प्रका. 1	
नवंबर 11	विलाप. 3-5, इब्रा. 8		दिसंबर 11	होशे 9-11, प्रका. 2	
नवम्बर 12	यहेज. 1-3, इब्रा. 9		दिसंबर 12	होशे 12-14, प्रका. 3	
नवंबर 13	यहेज. 4-6, इब्रा. 10:1-23		दिसंबर 13	योएल 1-3, प्रका. 4	
नवंबर 14	यहेज. 7-9, इब्रा. 10:24-39		दिसंबर 14	आमोस 1-3, प्रका. 5	
नवम्बर 15	यहेज. 10-12, इब्रा. 11:1-19		दिसंबर 15	आमोस 4-6, प्रका. 6	
नवंबर 16	यहेज. 13-15, इब्रा. 11:20-40		दिसंबर 16	आमोस 7-9, प्रका. 7	
नवम्बर 17	यहेज. 16, इब्रा. 12		दिसंबर 17	ओब. 1, प्रका. 8	
नवम्बर 18	यहेज. 17-19, इब्रा. 13		दिसंबर 18	योना 1-4, प्रका. 9	
नवम्बर 19	यहेज. 20-21, याकू. 1		दिसंबर 19	मीका 1-3, प्रका. 10	
नवंबर 20	यहेज. 22-23, याकू. 2		दिसंबर 20	मीका 4-5, प्रका. 11	
नवम्बर 21	यहेज. 24-26, याकू. 3		दिसंबर 21	मीका 6-7, प्रका. 12	
नवम्बर 22	यहेज. 27-28, याकू. 4		दिसंबर 22	नहूम 13, प्रका. 13	
नवम्बर 23	यहेज. 29-31, याकू. 5		दिसंबर 23	हब. 1-3, प्रका. 14	
नवंबर 24	यहेज. 32-33, 1 पत. 1		दिसंबर 24	सप. 1-3, प्रका. 15	
नवम्बर 25	यहेज. 34-35, 1 पत. 2		दिसंबर 25	हाग्गै 1-2, प्रका. 16	
नवम्बर 26	यहेज. 36-37, 1 पत. 3		दिसंबर 26	जक. 1-3, प्रका. 17	
नवम्बर 27	यहेज. 38-39, 1 पत. 4		दिसंबर 27	जक. 4-6, प्रका. 18	
नवंबर 28	यहेज. 40, 1 पत. 5		दिसंबर 28	जक. 7-9, प्रका. 19	
नवम्बर 29	यहेज. 41-42, 2 पत. 1		दिसंबर 29	जक. 10-12, प्रका. 20	
नवंबर 30	यहेज. 43-44, 2 पत. 2		दिसंबर 30	जक. 13-14, प्रका. 21	
			दिसंबर 31	मला. 1-4, प्रका. 22	

''सभी परिपक्वता के लिए और कुछ अगुवाई के लिए''

अब आप अगुवाई प्रशिक्षण के लिए, *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना* पर जाना चाहेंगे। आप यह पाएंगे कि इस प्रशिक्षण के लिए *अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना* के बहुत से पाठों को आपने पहले से ही पूरा कर लिया है।

VIII शिष्यों का अगुवाई में स्थिर होना

''सभी परिपक्वता के लिए, कुछ अगुवाई के लिए''

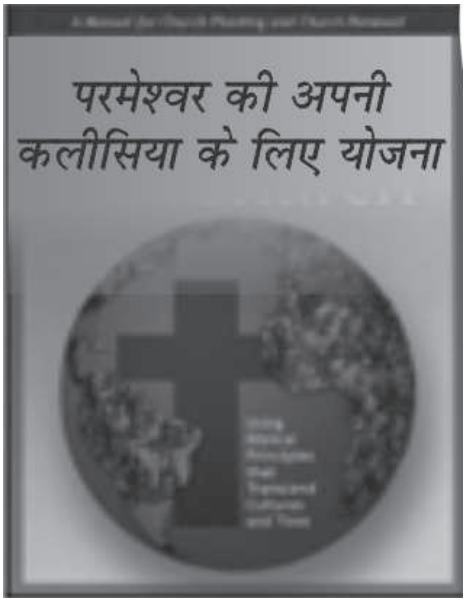

यदि आप परमेश्वर के वचन के लिए और अधिक भूखे हैं, तो आप अगुवाई और विकास में अपने प्रशिक्षण को जारी रखना चाहेंगे। यदि आपको ऐसा लगता है कि प्रभु आपको अगुवाई की ओर लेकर जा रहा है, तो मैं *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना* के बारे में बताना चाहूंगा, जो कलीसिया निर्माण और कलीसिया के नवीनीकरण की एक नियमावली और कार्य-पुस्तिका है। आप यह पाएंगे कि अपने *शिष्यों के लिए परमेश्वर की योजना* के बहुत से पाठों को आपने पहले से ही पूरा कर लिया है। मेरा मानना है कि यह उपकरण आज की कलीसिया और अगुवों से संबंधित है, क्योंकि यह:

- पवित्रशास्त्र के अधिकार और पर्याप्तता में एक नींव को डालता है।
- पवित्र आत्मा के एक नए कार्य के लिए अवसर प्रदान करता है।
- कलीसिया और सेवकाई के नवीनीकरण की प्रक्रिया में परिवार के महत्व को प्रगट करता है।
- पिन्तेकुस्त से अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर के सिद्धांतों का दृश्य उद्धरण देता है।
- अगुवों और कलीसियाओं की पौलुस के समान मसीह - केंद्रित और आत्मनिर्भर बनने में सहायता करता है।
- पवित्रशास्त्र से शक्तिशाली पूर्व-सांस्कृतिक और कालातीत सिद्धांतों का उपयोग करता है।
- आज के परिवार और कलीसिया द्वारा सामना किए जाने वाले तात्कालिक मुद्दों के बाइबल आधारित समाधान देता है।
- अगुवाई और कलीसिया निर्माण और नवीनीकरण के नमूने को सिखाता है; एक ऐसा नमूना जिसे ''रोका नहीं जा सकता'' और गरीबी व सताव में उन्नत हो सकता है।

अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना कोई परिकल्पना या पश्चिमी व पूर्वी शिक्षा नहीं है परंतु प्रेरितों के काम में ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित समय द्वारा जांचा गया नमूना है। इसे नई विधि को सिखाने या पुरानी में सुधार लाने के लिए नहीं लिखा गया है। पवित्र आत्मा की सामर्थ में, मसीह और प्रेरितों के उदाहरण पर चलते हुए, आप एक उन्नतिशील कलीसिया का निर्माण व स्थापित किए जाने को देखते हुए सफल हो सकते हैं। प्रभु की ओर देखने पर जान लें कि वह आपसे मिलना, आपको उठाना, आपको तैयार करना, और आपके प्रभाव वाले क्षेत्र में अपनी महिमा के लिए

कलीसियाओं का निर्माण और नवीनीकरण करने में आपको सशक्त व आपका मार्गदर्शन करना चाहता है।

आवरण पृष्ठ के भीतर *अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना* पर समीक्षा को देखें।

आप **www.newfoundationsinternational.org** पर एक निःशुल्क प्रति को डाऊनलोड कर सकते हैं या twbunn@gmail.com या skdriver2414@gmail.com पर पेपर कॉपी के लिए निवेदन कर सकते हैं। 3-5 पृष्ठों पर अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना में संसार भर से उनकी जीवन बदल देने वाली गवाहियाँ हैं जिन्होंने 30 भाषाओं में प्रकाशित पिछले संस्करणों पर काम किया था। हम इस सामयिक सुअवसर के लिए आपको धन्यवाद देते हैं कि आपकी, कलीसियाओं और सेवकाइयों की बाइबल आधारित, मसीह केंद्रित और आत्मनिर्भर होने में सहायता करे।

अब जबकि आपने इस पुस्तक को समाप्त कर लिया है, कृपया इस पर एक व्यक्तिगत गवाही लिखें कि इस अध्ययन ने आपके जीवन को कैसे बदला है। स्थान होने पर आप अपनी अतिरिक्त टिप्पणियों को लिख सकते हैं। .....

आगे बढ़ाएं!

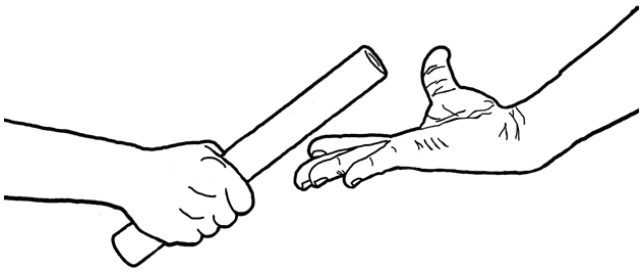

- इस कार्य-पुस्तिका अध्ययन का उद्देश्य आरंभिक कलीसिया द्वारा उपयोग किये गए बाइबल सिद्धांतों में **आपको** प्रशिक्षित करना है जिसने अपने समय में सुसमाचार के माध्यम से मसीह के लिए संसार को बदला और सुसमाचार का प्रचार किया।
- हमारा लक्ष्य आपके लिए इस अध्ययन में एक सहयोगी के रूप में **आप में** ज्ञान और इच्छा को बढ़ाना है, कि आप आज के शिष्य बनकर सुसमाचार से **अपने संसार** पर प्रभाव डालें।
- पौलुस ने जो तीमुथियुस से कहा वही हम आप से कहते हैं:

''जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं,
उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे;
जो दूसरो को भी सिखाने के योग्य हों।''
2 तीमुथियुस 2:2

- यह **आपके लिए दूसरों तक उसे आगे बढ़ाने** का समय है जो आपने परमेश्वर के घराने के एक सदस्य होने के बारे में सीखा है।
- नीचे दिए स्थान पर उन दो लोगों के नाम लिखें जिन तक आप उसे आगे बढ़ाना चाहेंगे जो आप परमेश्वर के घराने और यीशु के शिष्य होने के बारे में जानते हैं।

_____ _____

- ***आगे बढ़ाने*** के सुअवसरों के लिए प्रार्थना करना आरम्भ करें